पुस्तकालय संस्करण

26038

78

आदि कवि 'वली'

शम्सुद्दीन 'वली'

शम्सुद्दीन 'वली'

दिलदार की ख़बर पाने के लिए हरसूं बेताब रहने वाले उर्दू अदब के 'वाल्मीकि' (आदि कवि) शम्सुद्दीन 'वली' औरंगाबाद (दकन) के निवासी थे। उर्दू-दाँ इनको 'उर्दू काव्य का बाबा आदम' कहते हैं। इश्क-मजाज़ी इनकी शायरी का प्रधान स्वर है। इश्क़ को ही इन्होंने अपना मज़हब तथा सब कुछ माना है। इनके काव्य में प्रेम-सौन्दर्य, वर्णन-सौन्दर्य और ध्वनि-सौन्दर्य देखते ही बनता है। श्री राजेश शर्मा ने बड़ी योग्यता से इनके काव्य का सम्पादन किया है।



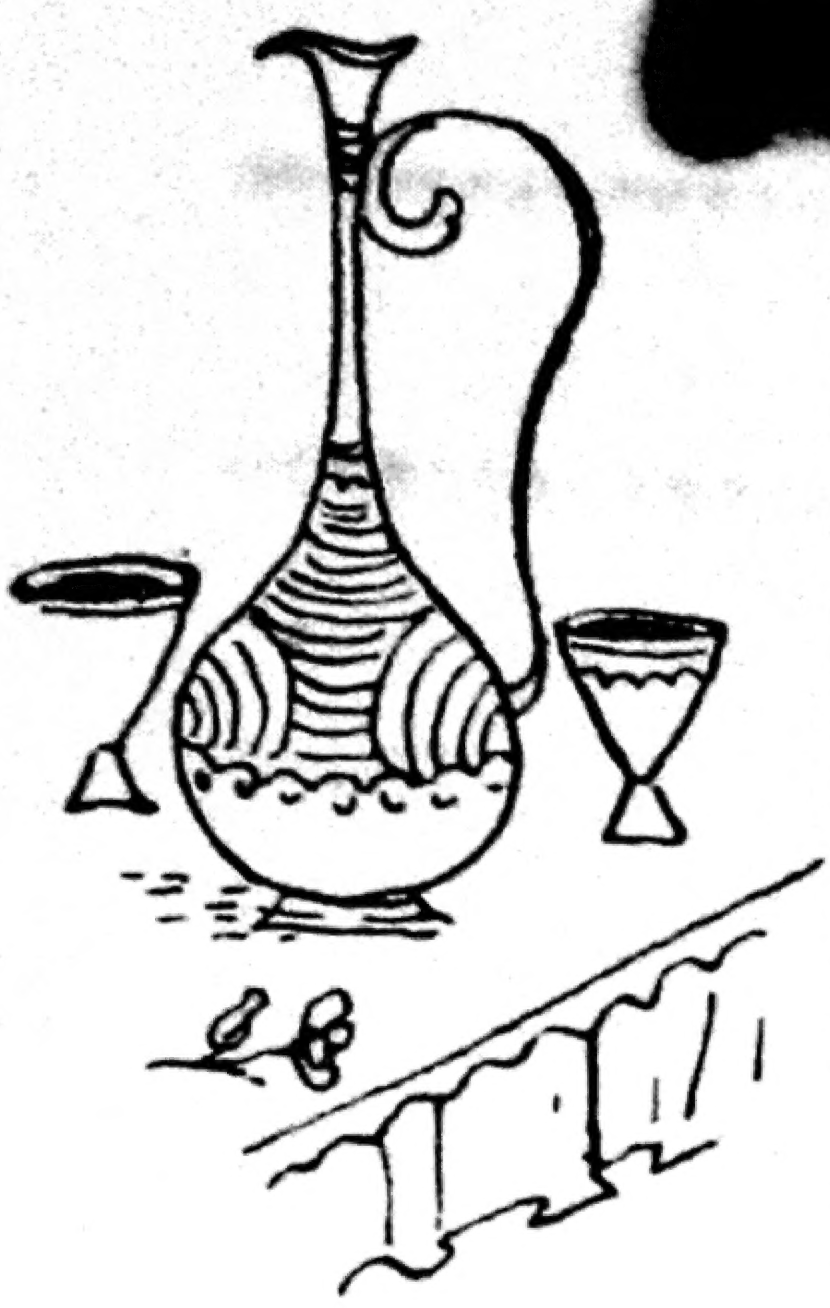
अर्चना
अभिनव
पुस्तक

वितरक

वर्मा ब्रदर्ज़, २१ सेंट्रल मार्केट, पो. बा. ५३१, नई दिल्ली

Library Sri Pratap College,
Srinagar.

[redacted]



आदि कवि 'वली'

शम्सुद्दीन 'वली'

Sh. Ghulam Mohamed & Sons
Booksellers & Publishers
MAISUMA BAZAR,
SRINAGAR.

अर्चना प्रकाशन, नई दिल्ली

Library Sri Pratap College,
Srinagar

[redacted]

Accession Number.......................

26038

Cat .... Class No......................

अर्पना प्रकाशन

पटेल नगर, नई दिल्ली

प्रकाशक

मूल्य :

हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस

क्वींस रोड, दिल्ली

मुद्रक

ADI KAVI 'WALI' SHAMSUDDIN WALI URDU POETRY

"वली" दकनी

बात रह जायगी कासिद वक़्त रहने का नहीं
दिल तड़पता है शिताबी लाख़ बार दिलदार की

दिलदार की खबर पाने के लिये हरसूं बेताब रहने वाले उर्दू अ़दब के वाल्मीकि (आदि कवि) शम्सुद्दान 'वली' औरंगाबाद (दकन) के निवासी थे। उनका जन्म सन् १६६८ और मृत्यु सन् १७४४ में मानी जाती है। इनके नाम के सम्बन्ध में अभी तक अन्वेषक और आलोचक एकमत नहीं हैं। कइयों ने उनका नाम वली मुहम्मद भी लिखा है।

नाम के समान ही अभी तक उनकी वंश-परम्परा तथा शिक्षा-दीक्षा आदि भी अनुसन्धान के विषय हैं। लेकिन यह निश्चित है कि यह अपने समय के अच्छे विद्वान् थे और तत्कालीन प्रचलित भाषाओं के साहित्य से भी पूर्ण परिचित थे। अपनी ज्ञान-पिपासा को शान्त करने के लिये यातायात के साधनों के अभाव के उस काल में भी इन्होंने दूर-दराज़ स्थानों का भ्रमण किया।

ऐसा माना जाता है कि 'वली' ने दो बार दिल्ली की यात्रा की। दिल्ली में जब यह तत्कालीन प्रसिद्ध साहित्यकार सहदुल्ला गुलशन से मिले और उसे अपनी कविता सुनाई, वह बहुत प्रभावित हुए। लेकिन सहदुल्ला गुलशन ने 'वली' को अपनी भाषा परिमार्जित करने की सलाह दी। भाषा-परिमार्जन से हमारा अभिप्राय यह है कि अरबी-फ़ारसी के शब्दों को अपनी कविता में प्रयुक्त करने का मशविरा दिया। बस, तभी से 'वली' की भाषा का रजूह तत्कालीन लोक और साहित्य भाषा से हट-

कर अरबी-फ़ारसी की तरफ़ हुआ और ऐसा लगता है कि उसने कहीं-कहीं तो चुन-चुनकर अरबी-फ़ारसी के शब्द अपनी कविता में रखे।

इश्क़-मजाज़ी 'वली' की शायरी का प्रधान स्वर है, जबकि उसमें कहीं-कहीं सूफ़ियत की झलक भी मिलती है, लेकिन उन्हें सूफ़ी हम कह नहीं सकते, क्योंकि इश्क़-मजाज़ी में तल्लीनता की बजाए वाह्य सौन्दर्य-वर्णन प्रधान है। किन्तु यह न समझना चाहिए कि उसमें गम्भीरता है ही नहीं। प्रेम की पीर तो बहुत ही अधिक है—

टुक 'वली' की तरफ निगह करो
सुबह सूँ मुन्तज़र है दर्शन का

फिर 'वली' ने इश्क़ को ही अपना मज़हब तथा सब कुछ माना है। इसलिये अपने प्रिय की सूरत देखना वह अपना ऐन-फर्ज़ तथा हक़ समझता है—

मज़हबे-इश्क़ में तेरी सूरत
देखना हम कूँ फर्ज़े-ऐन हुआ

केवल इतना ही नहीं, उस इश्क़ की इन्तहा के कारण जीवन मुफ़-लसी का मरकज़ बनके रह गया है। तभी तो कवि का मन कह उठा—

मुफ़लसी बेकसी की फौजों ने
शहर-दिल कूँ किया है वीराँ आ

ऊपर हम कह चुके हैं कि 'वली' में सूफ़ीयत की झलक भी है। वह प्रिय तो पिन्हा (अगोचर) है। उसका अनुभव हम इश्क़ की पवित्रता से कर सकते हैं। क्योंकि इश्क़ स्वयं पवित्रता का दूसरा नाम है और फिर पता नहीं वो (प्रिय) कहाँ रहता है। 'वली' स्वयं उससे पूछता है—

तिरी तारीफ़ करते हैं मुलामिक
सुना तेरी कहाँ हद्दे-बशर है!

'हद्दे-बशर' को खोजने की 'बाट में उश्शाक़ कई फ़ानी हुए!' तो

'वली' का विश्वास 'दुनियांए-फ़ानी' की अस्थिरता पर भी है।

संक्षेप में यों कहा जा सकता है कि 'वली' के काव्य में प्रेम-सौन्दर्य, वर्णन-सौन्दर्य, ध्वनि-सौन्दर्य और इन सबका वास्तविक रूप वर्तमान है। मज़हब के बारे में भी उनका ज्ञान सजग है। पुरुष-सौन्दर्य का चित्रण, प्राकृतिक उपमाएँ और (परिभाषिक रूप से) नख-शिख-वर्णन 'वली' के काव्य की अपनी विशेषता है।

वली की भाषा—वास्तव में 'वली' ने तत्कालीन लोक-भाषा में ही अपने काव्य की रचना की है। दिल्ली से प्रभावित होकर उनमें कुछ कठिनता अवश्य आ गई थी और दरबारी रविश के कारण कुछ अरबी-फ़ारसियत का रंग भी आ गया था, फिर भी उनकी भाषा को तत्कालीन 'लोक' से अलग नहीं कहा जा सकता। उनमें ब्रज, अवधि और संस्कृत भाषाओं की भी विशेष पुट है। कूँ, सूँ, रयन (रात), निस-दिन, ज्यूँ, परत, पीत (प्रीत), पीव, जीव, मोहन, सजन आदि अनेकों शब्द इसके उदाहरण हैं। इन शब्दों में जो भाषाई-पुट है, उसे ध्यान में रखने पर ही 'वली' को समझा जा सकता है।

हमने 'वली' के लिये 'आदि कवि' शब्द का प्रयोग किया है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि उससे पहले उर्दू (लिपि) में कविता थी ही नहीं। थी अवश्य, किन्तु उर्दू कविता को सही रूप में प्रयुक्त करने के कारण ही उर्दू-दाँ 'वली' को 'उर्दू-काव्य का बाबा आदम' कहते हैं। 'वली' से उर्दू भाषा का अलग मयार बनने लगा। नहीं तो गोलकुण्डा दरबार में उर्दू कविता का केन्द्र पहले भी था। किन्तु उनका रजूह हिन्दी या तत्-कालीन साहित्यिक भाषा ब्रजभाषा आदि की ओर अधिक था। 'वली' अरबी-फ़ारसी की ओर झुकता गया और प्रसिद्ध कवि मीर दर्द तक यह झुकाव ही रहा, जबकि उसके बाद उर्दू का एक अलग रूप स्थिर हो गया। 'वली' के बाद के 'हातिम' आदि कवियों में भी 'वली' का-सा

ही रंग है।

कुछ भी हो, 'वली' की काव्य-प्रतिभा की महानता से प्रेरित होकर ही यह उसके काव्य का कुछ चुना हुआ भाग पाठकों के हाथ में दिया जा रहा है। हमने 'वली' के सभी रंग पेश करने का प्रयास किया है। उसके अपने शब्दों में—

'वली' जिनने सुना मेरे सुखन कूँ
ज़बाँ पर उसकी फ़िकरे-आफ़रीं है।

—राजेश

ऐ रश्के-महताब[१] तू दिल के सहन में आ
फ़ुरसत नहीं है दिन को अगर तू रयन[२] में आ
ऐ गुल अज़ारे-गुंचा दहन[३] टुक चमन में आ
गुल सर पे रख के शमआ़ नमन[४] अंजुमन[५] में आ
ज्यों तिफ़्ले-अश्क[६] भाग नको मुझ नज़र सती
ऐ नूरे-चश्म, नूरे-नमत[७] ! मुझ नयन में आ
कब लग अपसके गुंचए-मुख को रखेगा बन्द
ऐ नौबहारे-बाग़े-मुहब्बत सुख़न में आ
ता-गुल के रुए-रंग उड़े ओस के नमन
ऐ आफ़ताबे-हुस्न टुक यक तूँ चमन में आ
तुझ इश्क़ सों किया है 'वली' दिल कों बैते-ग़म[८]
सुरअ़त[९] सती ए मायन ए-बेगाना ! मन में आ

वो नाज़नीं अदाएँ एजाज़[१०] है सरापा[११]
ख़ूबी में गुलरुख़ाँ सों मुमताज़ है सरापा
ऐ शोख़, तुझ नयन में देखा निगाह कर-कर
आशिक़ के मारने का अन्दाज़ है सरापा
जग के अदा शनासाँ है जिनकी फ़िक्रे-आली
तुझ क़द कों देख बोले यो नाज़ है सरापा
क्यों हो सकें जगत के दिलबर तेरे बराबर
तू हुस्न होर अदा में एजाज़ है सरापा

---

१. चाँद भी जिससे ईर्ष्या करे २. रात ३. फूल की कली जैसा मुँह ४. समान ५. सभा, दुनिया ६. अश्रुकण ७. आँख की रोशनी, रोशनी के समान ८. ग़म का गीत ९. जल्दी १०. जादू ११. सर से पैर तक।

गाहे ऐ इस्वी-दम[1] यक बात लुत्फ़ सों कर
जाँ बख़्श मुझकूँ तेरा आवाज़ है सरापा
मुझ पर 'वली' हमेशा दिलदार मेहरबाँ है
हरचन्द हस्बे-ज़ाहिर तन्नाज़[2] है सरापा

किताब अल-हुस्न यह मुख सफ़ा तेरा सफ़ा दिस्ता
तिरे अब्रू के दो मिस्रा सों इसका इब्तदा दिस्ता
तिरा मुख हुस्न का दरिया-ओ मौजाँ[3] चीने-पेशानी
ऊपर अब्रू की कश्ती के यो तिल ज्यों नाख़ुदा[4] दिस्ता
तिरे लब हैं ब-रंगे-हौज़े-कोसर मख़ज़ने-ख़ूबी[5]
ये ख़ाले-अम्बरीं[6] तिस पर हिलाला-सा[7] खड़ा दिस्ता
इशाराते-आँखियाँ सूँ गर्चे हूँ बीमार मैं लेकिन
तेरे लब ऐ मसीहे-वक़्त[8], क़ानूने-शफ़ा दिस्ता
हुआ जो गौहरे-दिल अर्क़े-बहरे-हुस्न है नायाब
ज़बस[9] दरियाए-हुस्ने दिलबराँ बे-इन्तहा दिस्ता
बयाँ उसकी नज़ाकत होर लताफ़त[10] का लिखूँ ताकि
सरापा महश्रे-ख़ूबी मने[11] नाज़ो-अदा दिस्ता
यो ख़त का हाशिया गर्चे 'वली' है मुख़्तसर लेकिन
मत्तवल[12] के मुआनी[13] का तमामी मुद्दआ दिस्ता

---

१. ईसा जैसी साँस　२. मग़रूर　३. लहरें　४. नाविक　५. सौन्दर्य का खज़ाना　६. तिल का काला निशान　७. ईद का चाँद　८. समय के मसीहा, मालिक　९. हरचन्द　१०. सुन्दरता　११. अत्यधिक सुन्दरता में　१२. अर्थ की लम्बाई, गहराई　१३. अर्थ।

मत्त आतिशे-ग़फ़लत सों मेरे दिल कूँ जला जा
मुश्ताक़[1] दरस का हूँ टुक यक दरस दिखा जा
बेरहम न हो, ग़ुस्सा न कर, बात मेरी सुन
डरता नहीं, यक बात की सौ बात सुना जा
जलता हूँ मैं मुद्दत सती ऐ हुस्न के दरिया
टुक मुख कूँ दिखा, आग मिरे दिल की बुझा जा
ख्वाहिश है मुझे दरद के पढ़ने की हमेशा
यक बार किसू तरज़ सों टुक इस्म[2] बता जा
जब उसकी तरफ जाता हूँ कर क़स्दे-तमाशा
कहता है मुझे ख़ोफ़े-रकीबाँ[3] सूँ कि जा-जा
मैं बोसा[4] किया लब सों परी-रु[5] के तलब[6] ज्यों
गुस्से सती बोलया कि चला जा बे चला जा
मुद्दत सों 'वली' झाँजे में है हाथ सों दिल के
तू भी ऐ जिगर आह की नौबत[7] कूँ बजा जा

गर तू चाहता है कि देखूँ रंगे वसहत मशरबी[8]
सिदक-नीयत[9] सूँ शताबी दामने सहरा पकड़

ख्वाबे-खुश आती नहीं शब कूँ तुझ बिन ऐ सनम
जब से देखे हैं तिरी तस्वीर याराँ अलख़यास[10]

---

१. इच्छुक २. नाम ३. दुश्मन ४. चुम्बन ५. सुन्दरी ६. माँगा ७. वीणा ८. पीने की प्याली की फराख़दिली ९. अच्छी नियत १०. दुहाई।

तन पीस सुर्मा करके बसा तुझ नयन में जा
हो बूए-गुल[1] बसा हूँ तिरे पीरे-मन[2] में जा
हर तार में ज़ुल्फ़ के तिरी सैर जा करूँ
बादे-सबा[3] का साथ लिया हूँ चमन में जा
आतिश[4] ने तुझ जमाल[5] के जल्वे कूं देख कर
कीती है ज़िन्दगी कूँ पस की कफ़न में जा
जग में जो एतबार न पाया तिरे नज़ीक
होकर खिजल[6] सूरज ने लिया है गगन में जा
रक्खा है तार-तार किया उसके शौक़ में
हरदम खयाल बान्ध के उसकी नयन में जा
जो देखते रक़ीब असी हाल कूं तमाम
दिन-रैन जलते रहते वो दोज़ख़-अगन[7] में जा
मानिन्द खूं अक़ीक़[8]-'वली' गुल के बह चले
शोहरत मिरे अंभू[9] की पड़ी जब यमन में जा

मत गुस्से को शौले सूं जलते कूं जलाती जा
टुक मेहर के पानी सूं तू आग बुझाती जा
तुझ चाल की क़ीमत सों दिल नहिं है मिरा वाक़िफ
ऐ मान भरी चंचल, टुक भाव बताती जा
इस रात अँधेरी में मत भूल पड़ूं तिस सों
टुक पाँव के झाँझे की झँकार सुनाती जा

१. फूल की सुगन्ध २. मन की पीड़ा ३. ठण्डी हवा ४. अग्नि
५. सौन्दर्य ६. शर्मिन्दा ७. नरक की आग ८. लाल जवाहर
९. आँसू।

मुझ दिल के कबूतर कूं पकड़ा है तिरी लट ने
यह काम धरम का है, टुक इसको छुड़ाती जा
तुझ मुख की परसतश[1] में गई उम्र मिरी सारी
ऐ बत की बचनहारी, टुक उसकूं पुजाती जा
तुझ इश्क़ में जल-जल कर सब तनकूं किया काजल
यह रोशनी-अफ़ज़ा[2] है अँखियाँ कूं लगाती जा
तुझ नेह में दिल जलकर जोगी की लिया सूरत
यक बारे इसे मोहन[3] छाती सूँ लगाती जा
तुझ घर की तरफ सुन्दर आता है 'वली' दायम[4]
मुश्ताक़ दरस का है टुक दरस दिखाती जा

दिलरुबा आया नज़र में आज मेरी ख़ुश अदा
ख़ुश अदा ऐसा नहीं देखा हूँ दूजा दिलरुबा
बेवफ़ा गर तुझको बोलूं, है बजा ऐ नाज़नीं
नाज़नीं आलम मने होते हैं अक्सर बेवफ़ा
कम-नुमाँ है नौजवाँ मेरा बरंगे माहे-नौ[5]
माहे-नौ होता है अक्सर ऐ अज़ीज़ाँ कम-नुमाँ
मुद्दए-आश्क़ाँ हर आन है दीदारे-यार
यार के दीदार बिन दूजा अबस[6] है मुद्दआ[7]
कीमया[8] आशिक़ के हक़ में है निगाहे-गुलरुखाँ[9]
गुलरुखाँ सों जग में पाया हूँ 'वली' यह कीमया

---

१. पूजा, खोजना २. प्रकाशदायक ३. प्रियतम ४. हमेशा, अक्सर ५. नया चाँद ६. बेकार ७. चाह, उद्देश्य ८. फ़रेब ९. फूल-सी कोमल नज़रें।

दिल कूँ लगती है दिलरुबा की अदा
जी में बस्ती है खुश अदा की अदा
गर्चे सब खूबरु[१] हैं ख़ूब वले
क़त्ल करती हैं मीरज़ा की अदा
हर्फ़े-बेजा बजा है गर बोलूँ
दुश्मने - होश है पिया की अदा
नक़्शे - दीवार क्यों न होवे आशिक़
हैरत - आफ़्ज़ा[२] है बेवफ़ा की अदा
गुल हुए अर्क़े - आब[३] शबनम में
देख उस साहिबे - हया[४] की अदा
अश्क - रंगी ग़र्क हैं निस - दिन
जिन ने देखा है तुझ हिना[५] की अदा
ऐ 'वली' दर्दे - सर की दारु है
मुझ कूँ उस सन्दली - क़बा[६] की अदा

हुआ है सैर का मुश्ताक़ बेताबी सों मन मेरा
चमन में आज आया है मगर गुल-पेरहन[७] मेरा
मिरे दिल की तजल्ली[८] क्यों रहे पोशीदा मजलिस में
ज़हीफ़ी सों हुआ है पर्दा - ए - फ़ानूस[९] तन मेरा
नहीं है शौक़ मुझकूँ बाग़ की गुलग़श्त[१०] का हर्गिज़
हुआ है जल्वागर दाग़ाँ सों सीने का चमन मेरा

---

१. सुन्दर २. आश्चर्यवर्द्धक ३. पानी-पानी होना ४. शर्मीले ५. मेंहदी ६. चन्दन के बूरे जैसी ठण्डी, पतली कमर वाली ७. फल से भी बढ़िया पौशाक़ वाला; प्रिय ८. रोशनी ९. कमज़ोर १०. सैर।

मुवा हूँ तुझ जुदाई के दुखाँ, ऐ नूरे - ऐने - दिल
बरङ्गे-मरदमक[१] अँखियाँ का पर्दा है कफ़न मेरा
लगे फीकी नज़र में ऐ 'वली' दूकाने - हलवाई
अगर हो जल्वागर बाज़ार में शीरीं - बचन[२] मेरा

देखा है जिन ने तेरे रुख़सार[३] का तमाशा
नहिं देखता सूरज की झलकार का तमाशा
ऐ रश्क़े-बाग़े-जन्नत[४], जब सों जुदा हुआ तू
दोज़ख़ है मुझकूँ तब सों गुलज़ार का तमाशा
बेक़स्द[५] मुझ ज़बाँ पर आता है लफ़्ज़े-तमकीं[६]
देखा हूँ जब से तेरी रफ़्तार का तमाशा
हिन्दू ने साफ़ दिल से डाला गले में रिश्ता
देखा जो तुझ सनम के ज़ुन्नार[७] का तमाशा
नर्गिस नमन रही नहिं पल मारने की ताक़त
आ देख, उस अँखियाँ के बीमार का तमाशा
उस मुख का रंग उड़कर क़ौसे-क़ज़ह[८] कूँ पहुँचा
देखा जो तुझ भवाँ की तलवार का तमाशा
तब सों 'वली' का मतलब जा बीच में पड़ा है
देखा है जब सों तेरी दस्तार[९] का तमाशा

---

१. पुतलियाँ २. मधुर वचन ३. कपोल ४. स्वर्ग के बगीचे से भी बढ़कर ५. अनिच्छा ६. कद्रदानी ७. जनेऊ ८. इन्द्र-धनुष ९. पगड़ी।

मूसा अगर जो देखे तुझ नूर का तमाशा
उस कूँ पहाड़ होवे फिर तूर का तमाशा
ऐ रश्के-बाग़े-जन्नत तुझ पर नज़र किये सूँ
रिज़वाँ[१] को होवे दोज़ख फिर हूर का तमाशा
रोज़े-सियाह[२] उसके मू-मू[३] सूँ जल्वागर है
तुझ ज़ुल्फ़ में जो देखा देजूर[४] का तमाशा
कसरत[५] के फूल बन में जाते नहीं है आरिफ़[६]
बस है मोहदाँ[७] को मन्सूर का तमाशा
है जिस सूँ यादगारी वो जल्वागर है दायम[८]
तू चीं में देख जाकर फ़ख़फ़ूर[९] का तमाशा
वो सर-बुलन्दे-आलम अज़बस है मुझ नज़र में
ज्यों आस्माँ अयाँ है मुझ दूर का तमाशा
तुझ इश्क़ में 'वली' के अंझू उबल चले हैं
ऐ बहरे-हुस्न[१०] आ देख इस पूर का तमाशा

रुह-बख़्शी है काम तुझ लब का
दमे-ईसा है नाम तुझ लब का
हुस्न के ख़िज़्र ने किया लबरेज़
आबे-हैवाँ[११] सूँ जाम तुझ लब का
मन्तक़-ओ-हिक़मत-ओ-मुआनी[१२] पर
मुश्तमिल[१३] है क़लाम तुझ लब का

१. स्वर्ग का दरबान २. काली रात ३. रोम-रोम ४. अँधेरी रात ५. भीड़भाड़, अधिक ६. ले जाने वाले ७. ख़ुदा को जानने वाला ८. हमेशा ९. गौरव १०. सौन्दर्य-सागर ११. अमृत १२. हिक़मत तथा इल्म के जानकार, विद्वान् १३. छा जाने वाला।

जन्नते-हुस्न में किया हक़ ने
हौज़े-कोसर[1] मकाम तुझ लब का
रगे-याकूत[2] के क़लम सूं लिखीं
ख़त परस्ताँ पयाम तुझ लब का
सब्ज़ा-ओ-बर्ग-ओ-लाला[3] रखते हैं
शौक़े-दिल में दवाम[4] तुझ लब का
ग़र्के-शकर[5] हुए हैं कामों-ज़बाँ
जब लिया हूँ मैं नाम तुझ लब का
मशले-याकूत[6] ख़त में है शागिद
साग़रे-मै मदाम तुझ लब के
है 'वली' की ज़बाँ कूं लज़्ज़त बख़्श
ज़िक्र हर सुबह्-ओ-शाम तुझ लब का

मुझ घट में ऐ न-घर-घट है शौक़ तुझ घुँघट का
देखे सूं लुट गया दिल तेरी ज़ुल्फ़ का लटका
कर याद तुझ कपट कूं पड़ते हैं अश्क टप-टप
मुख बात बोलता हूँ शिकवा तेरी कपट का
तुझ नयन के देखन कूं दिल थाट कर चला था
ग़मज़े[7] के देख थट कूं नाचार हो के थटका[8]
तुझ ख़त[9] के बिन तवज्जह खुलना है उसका मुश्किल
हल्क़े में तुझ ज़ुलफ़ के जो जीव जा के अटका

---

१. स्वर्ग-नदी का हौज़ २. जवाहर के टुकड़े ३. हरियाली, बिजली तथा लाल फूल ४. हमेशा ५. मिठास में डूब गये ६. लाल जवाहिर के समान ७. इशारा ८. ठिठक गया ९. तिल का निशान।

हर्गिज़ 'वली' किसी कन शाकी[1] तेरा न होता
गर तुझ में ऐ हटीले होता न तौर हट का

नहीं शौक़ उसके दिल में कधीं लाला ज़ार का
मुश्ताक़[2] है जो पीव के रुख़े-आबदार का
लगता है मुझ कूँ पंजा खुर्शीदे-राशादार[3]
देखा हूँ जब सूँ दस्ते-निगारीं-निगार का[4]
हर ज़र्रा उसकी चश्म में लबरेज़े-नूर है
देखा है जिनने हुस्ने-तजल्ली[5] बहार का
ताक़त नहीं किसी कूँ कि यह हर्फ़ सुन सके
अहवाल गर कहूँ मैं दिले-बेक़रार का
आवे 'वली' हमारी तरफ़ तेग़े-नाज़ ले
उस शोख़ कूँ ख़याल अगर है शिकार का

जग मने दूजा नहीं है ख़ूबरू तुझ सार का
चाँद कूँ है आस्माँ पर रश्क तुझ रुख़सार का
जब से तेरी ज़ुल्फ कूँ देखा है ज़ाहिद[6], ऐ सनम
तर्क कर सबह[7] कूँ है मुश्ताक़ तुझ ज़ुन्नार का
दिल को मेरे तब सेतीं हासिल हुआ है पेचो-ताब
जब सूँ देखा पेच तेरी लटपटी दस्तार[8] का

---

१. चाहक, शौक़ीन २. इच्छुक ३. किरणों से युक्त सूर्य ४. बनाने या लिखने वाले का हाथ, यहाँ पिय का सुन्दर हाथ ५. रोशनी ६. धार्मिक ७. तस्बीह ८. पगड़ी ।

तुझ गली की ख़ाके-राह[1] जब सूँ हुआ हूँ ऐ पिया
तब सूँ तेरा नक़्शे-पा[2] तकिया[3] है मुझ बीमार का
बुलबुलाँ गर यक नज़र देखें तिरे मुख का चमन
फिर न देखें ज़िन्दगी में मुख कधीं गुलज़ार का
बहरे-बेपायाँ[4] ने मुझ अँझवाँ सती पाया है फ़ैज़[5]
अब्रनीसाँ[6] अब्द है मुझ चश्मे-गोहरबार[7] का
टुक अपस का मुख दिखा ऐ राहते-जानो-जिगर
है 'वली' मुद्दत सती मुश्ताक़ तुझ दीदार का

देखना हर सुबह तुझ रुख़सार का
है मुताला मुतल-ए-अनवार[8] का
बुलबुलो परवाना करना दिल के तईं
काम है तुझ चेहरा-ए-गुलनार का
सुबह तेरा दरस पाया था सनम
शौक़े-दिल मुहताज है तक़रार का
माह[9] के सीने उपर ऐ शमआ-रूह
दाग़ है तुझ हुस्न की झलकार है
दिल कूँ देता है हमारे पेचो-ताब
पेच तेरे तुर्रा-ए-तरार[10] का

---

१. पथ की धूल २. पैरों का निशान ३. पवित्र स्थान ४. अतल सागर ५. फ़ायदा ६. बादलों से युक्त ७. आँख के मोती, आँसू ८. प्रकाश को अध्ययन करना ९. चाँद १०. तेज़-तरार पगड़ी का तुर्रा, ऊँचा तुर्रा।

जो सुनिया तेरे दहन सूं यक वचन
भेद पाया नुस्ख़-ए-इसरार[१] का
चाहता है इस जहाँ में गर बहिश्त
जा तमाशा देख उस रुख़सार का
आरसी के हाथ सूँ डरता है ख़त
चोर कूं है ख़ौफ़ चौकीदार का
सरकशी आतिश मज़ाजी[२] है सबब
नासहों[३] कूँ गर्मि-ए-बाज़ार का
ऐ 'वली' क्यों सुन के नासह की बात
जो दीवाना है परी-रुख़सार[४] का

याद करना हर घड़ी उस यार का
है वज़ीफ़ा मुझ दिले-बीमार का
आरज़ू-ए चश्म-ए-कोसर[५] नहीं
तिश्ना-लब[६] हूँ शर्बते-दीदार का
आक़बत[७] क्या होएगा, मालूम नहीं
दिल हुआ है मुब्तिला दिलदार का
क्या कहे तारीफ़ दिल है बेनज़ीर[८]
हर्फ़-हर्फ़ उस मख़ज़ने-इसरार[९] का
गर हुआ है तालबे-आज़ादगी
बन्द मत हो सबह-ओ-ज़ुन्नार का

---

१. बात का रहस्य २. गर्म मिज़ाज ३. धर्मोपदेशक ४. गाल ५. स्वर्ग का चश्मा ६. प्यासा ७. अन्त ८. लाजवाब ९. सौन्दर्य का गुप्त खज़ाना।

मसनदे-गुल[1] मंज़िले-शबनम हुई
देख रुतबा दीदाए-बेदार[2] का
ऐ 'वली' होना सरीजन[3] पर निसार
मुद्दआ है चश्मे-गौहरबार का

अयाँ है हर तरफ आलम में हुस्ने-बेहिजाब[4] उसका
बग़ैर अज़ दीद-ए-हैराँ नहीं जग में नक़ाब उसका
हुआ है मुझ पे शमआ बज़्म यक रंगीं सूँ यो रोशन
कि हर ज़र्रे-ऊपर ताबाँ है दायम आफ़ताब उसका
करे उश्शाक़ कूँ ज्यूँ सूरते-दीवारे-हैरत सूँ
अगर पर्दे सूँ वा[5] होवे जमाले-बेहिजाब[6] उसका
सजन ने यक नज़र देखा निगहे-मस्त सूँ जिसकूँ
ख़राबाते-दो आलम[7] में सदा है वह ख़राब उसका
मेरा दिल पाक है अज़बस 'वली' रंगे-कदूरत[8] सों
हुआ जूँ जौहरे-आइना मख़फ़ी[9] पेजो-ताब उसका

तुझ इश्क़ सूँ उश्शाक़ का मन आग हुआ
खुर्शीद-नमन तमाम तन आग हुआ
हर तख़्त-ए-लाले पे लिखे लाली सूँ
तुझ रंग की ग़ैरत सूँ चमन आग हुआ

---

१. फूलकी मसनद २. खुली आँखें ३. साजन ४. बे-पर्दा ५. प्रगट ६. प्रगट सौन्दर्य ७. दोनों जहान ८. कुदरत का रंग ९. गुप्त, पोशीदा।

तेरी ज़ुल्फाँ का हर तारे-सियाह है काल आशिक़ का
हुआ है उसके जल्वे सूँ परेशाँ हाल आशिक़ का
नहीं दरकार ता-बोले बयाँ अपनी ज़बाँ सेती
अयाँ है अश्क के तूमार[1] सूँ अहवाल आशिक़ का
न जावे मुल्के-बेताबी सूँ यक लहमा कधी बाहिर
ज़मीं में बेक़रारी की गड़्या है नाल[2] आशिक़ का
तिरा दिल ऐ परी-पैकर[3] अगर शोहरत का तालिब नहीं
तो अपना मुख दिखाकर दूर कर जंजाल आशिक़ का
अगर जावे पिया के मुख तरफ बख़्त-आज़माई[4] कूँ
करे पिव का तग़ाफुल[5] उठ के इस्तक़बाल आशिक़ का
पिया के अबरु-ए-कज[6] ने किया है दिल कूँ सरकर दाँ
करो मालूम इस चोगानो-गो[7] सूँ हाल आशिक़ का
जहाँ जाता हूँ वहाँ आता है साये के नमन पीछे
तिरे बिरह ने ऐ ज़ालिम लिया दम्बाल[8] आशिक़ का
न होवे चर्ख़[9] की गर्दिश सूँ उसके हाल में गर्दिश
बजा है कुत्ब[10] के मानिन्द इस्तक़वाल आशिक़ का
कधी दामे-मुहब्बत सूँ ख़लासी उसकूँ हर्गिज़ नहिं
तेरी अँखियाँ के डोरे सूँ बँधा है जाल आशिक़ का
न पूछो इश्क़ में जोशो-ख़रोशे-दिल की माहीयत[11]
बरंगे-अब्रे-दरिया[12] बार है रूमाल आशिक़ का

---

१. लम्बाई, अधिकता २. नली, यहाँ शरीर ३. सुन्दरी ४. भाग्य-परीक्षा ५. कल्पना ६. टेढ़ी भँवें ७. पोलो जैसा पुराना खेल, चौगान के खिलाड़ी ८. पोंछ ९. आकाश, भाग्य १०. कुतब या ध्रुव तारा, अटल ११. वास्तविकता १२. बादल तथा दरिया।

'वली' यो मिस्रा-ए-रंगीं हुआ है दर्द जानो-दिल
फ़िदा है इश्क़ में दिलबर के जानो-माल आशिक़ का

हुआ है दिल मिरा मुश्ताक़ तुझ चश्मे-शराबी[1] का
ख़ुराबाती[2] उपर आया है शायद दिन खराबी का
किया मदहोश मुझ दिल कों उन्नींदे-नयन-साक़ी ने
अजब रखता है कैफीयत ज़माना नीम ख़्वाबी[3] का
ख़ते-शबरङ्ग[4] रखता है अ़दावत हुस्ने-ख़ूबाँ[5] से
कि ज्यों ख़फ़ाश[6] है दुश्मन शुआए-आफ़ताबी[7] का
न जाऊँ सहने-गुलशन में कि खुश आता नहीं मुझको
बग़ैर-अज़-माहे-रू[8] हर्गिज़ तमाशा माहेताबी[9] का
न पूछो अब हुआ है कमसुख़न वो दिलबरे-रंगीं
लबे-तस्वीर पर है रंगे-दायम लाजवाबी का
परी रूख[10] कूँ उठाना नींद सूँ बरजा नहीं आ़शिक़
अ़जब कुछ लुत्फ़ रखता है ज़माना नीम ख़्वाबी का
न जानूँ किस परी-रु सूँ हुआ है जा के हमज़ानू[11]
कि आइने ने पाया है लक़ब[12] हैरते-मुआबी[13] का
'वली' सूँ बेहिसाबी बात करना बेहिसाबी है
नहीं वो आशना ऐ यार हर्गिज़ बेहिसाबी का

---

१. मस्त आँख २. झक्खी ३. अधजगी दशा ४. काला तिल ५. सुन्दरों को सौन्दर्य ६. चमगीदड़ ७. सूर्य की किरण ८. चाँद-सी सुन्दर ९. चाँदनी १०. सुन्दरी ११. साथ बैठने वाला १२. नाम १३. आश्चर्य का ठिकाना।

टुक 'वली' की तरफ़ निगाह करो
सुबह सूँ मुन्तज़र है दर्शन का

शुग़ल बेहतर है इश्क़बाज़ी का
क्या हक़ीकी[१] क्या मजाज़ी[२] का
हर ज़बाँ पर है मशले-शाना[३] मदाम
ज़िक्र तुझ ज़ुल्फ़ की दराज़ी[४] का
होश के हाथ में अ़ना न रही
जब सूँ देखा सवार ताज़ी का
तैं दिखा कर अपस के मुख की किताब
इल्म खोया है दिल सूँ काज़ी का
आज तेरी भवाँ ने मस्जिद में
होश खोया है हर नमाज़ी का
गर नहीं राज़े-इश्क़ सूँ आगाह
फ़ख्र बेजा है फ़ख्रे-राज़ी का
ऐ 'वली' सर्व-क़द[५] कूँ देखूँगा
वक़्त आया है सरफ़राज़ी[६] का

तू सर सूँ क़दम तलक झलक में
गोया है क़सीदा[७] अनवरी[८] का

१. वास्तविक २. अवास्तविक ३. कन्धा ४. लम्बाई ५. सर्व के पेड़ के समान लम्बा, प्रिय ६. सिर-अर्पण ७. विरहगीत ८. प्रकाश की किरण ।

अबस[1] ग़ाफिल हुआ है गा फ़िक्र कर पिउ के पाने का
सफ़ा कर आरसी दिल की सिकन्दर हो ज़माने का
चिराग़े-दिल अगर गुल[2] है तो कर ज्यों गुल[3], उसे रोशन
कि यह तौहफ़ा है सालक[4] कूँ नज़क हक़ के ले जाने का
न पावे दीन की लज़्ज़त जिसे दुनियाँ की ख़्वाहिश है
फ़ज़ल[5] है लज़्ज़ते - दुनिया हक़ीक़त के ख़ज़ाने का
नहीं यो आह होर[6] ज़ारी जो सीने होर अखाँ में है
समझ बेशक की अफ़सूँ[7] है यह उस पिऊ को लुभाने का
मुए को ज्यूँ बख़्शा आबे - हैवाँ बेगुमाँ है ज्यूँ
नयन में त्यों निज पानी है सोते दिल के जगाने का
बिरह के आग में धँसने की नहीं है कुछ फिकर दिल को
कि ज्यों ग़म नहीं है इब्राहीम को आतिश में जाने का
'वली' तुझ कूँ रखेंगे शेरे-मर्दा अपनी मजलिस में
रहे गर सग्ग[8] होकर दायम नबी के आस्ताने[9] का

मुफ़लसी बेकसी की फ़ौजाँ ने
शहर-दिल कूँ किया है वीराँ आ

मज़हबे - इश्क़ में तेरी सूरत
देखना हम कूँ फ़र्ज़े-ऐन हुआ

---

१. बेकार २. बुझा हुआ ३. फूल ४. राही ५. मेहर ६. और ७. जादू ८. कुत्ता, यहाँ वफ़ादार ९. चौखट।

लिया है जब सूँ मोहन ने तरीक़ा खुदनुमाई का
चड़या है अरसी पर तब सूँ रंग हैरत फ़ज़ाई[१] का
अपस की ज़ुल्फ़ काफ़िर केश की झलकार टुक दिखला
कि ज़ाहिद बेख़बर दम मारता है पारसाई[२] का
सूरज कूँ गर इजाज़त हो तो आवे सीस सूँ चलकर
कि उसकूँ शौक़ है तुझ आस्ताँ[३] पर जब हसाई[४] का
मिरे दिल की हक़ीक़त यूँ हुई है शोहरहे - आलम
कि ज्यूँ मज़कूर-हूँ[५] है जग में तेरी दिल सबाई का
करे ता तुझ शकर-लब से तलब इक बोसा-ए-शीरीं
मिरे दिल ने लिया है इस सबब शेवह-गदाई[६] का
जू कुई तेरी सिया-चश्माँ[७] कूँ समझा बेमुरव्वत कर
भरोसा क्यों के होवे उसकूँ तेरी आशनाई का
सजन की अंजुमन में हुए तब हरयक तबीह[८] रोशन
'वली' चर्चा अच्छे मजलिस में जब तबे-आज़माई का

तुझ लब की सिफ़्त लाल-ए-बदख़्शाँ[९] से कहूँगा
जादू है तेरे नयन गज़्ज़ालाँ[१०] से कहूँगा
दी बादशही हक़ ने तुझे हुस्ने - नगर की
यो क़श्वरे - ईराँ[११] मैं सुलेमाँ से कहूँगा

---

१. अधिक आश्चर्य २. दानाई, बड़प्पन ३. चौखट ४. माथा रगड़ने ५. आगाही, ज़िक्र ६. माँगने का ढंग, आदत ७. काली आँखें ८. तबीयत ९. बदखस्तान—एक शहर (अफ़गानिस्तान) यहाँ मतलब—वहाँ के ख़ूबसूरतों से है १०. मृग-शावक ११. ईरान में एक मुल्क, जहाँ का सौन्दर्य प्रसिद्ध था।

Library Sri Pratap College, Srinagar.

निकला है वो सितमगर तेग़े-अदा कूँ लेकर
सीने का आश्काँ के अब फ़तहयाब होगा

तहरीफ़ तेरे क़द की अलिफ़वार[1] सरीजन
जा सर्वे-गुलिस्ताँ कूँ खुश-इलहाँ सूँ कहूँगा
मुझ पर न करो ज़ुल्म तुम ऐ लैला-ए ख़ूबाँ[2]
मजनूँ हूँ, तेरे ग़म को बियाबाँ सूँ कहूँगा
देखा हूँ तुझे ख्वाब में ऐ माह-ए-ख़ूबी[3]
इस ख्वाब को जा यूसफ़े-कुनहा सूँ कहूँगा
जलता हूँ शबो-रोज़ तिरे ग़म में ऐ सजन
यह सोज़ तेरा मशहले-सोजाँ[4] सूँ कहूँगा
यकलक़्त तिरे सफ़-ए-रुख़ पर नहीं बेजा
इस मुख कूँ तिरे सफ़-ए-कुराँ से कहूँगा
कुर्बान परी मुख प हुई चोब-सी जलकर
ये बात अजायब महे-ताबाँ[5] से कहूँगा
बेसब्र न हो ऐ 'वली' इस दर्द सूँ हर्गिज़
चलता हूँ तिरा दर्द मैं दरमाँ[6] से कहूँगा

रखता है क्यों जफ़ा को मुझ पर रवा ऐ ज़ालिम
महशर में तुझ सूँ मेरा आख़िर हिसाब होगा

---

१. क्रमशः २. सुन्दरी लैला ३. चाँद-सी सुन्दर ४. दुखिय
५. चाँदों से, यहाँ सुन्दरों से ६. चिकित्सक, इलाज करने वाले।

मुझे अचरज यही आता पिया के पान खाने का
न जानूँ क्या सबब याकूत[1] असली के रंगाने का

इस क़द सूं जिस चमन में वो नौनिहाल होगा
क्या सर्व क्या सनोबर हरयक निहाल होगा
आवेगा गर सुख़न में वो माह - ए - लताफ़त[2]
शर्मिन्दा उसके आगे आबे - ज़लाल[3] होगा
आलम में जो हुआ है तालब तिरी भवाँ का
उसके नग़ीने-दिल पर नक़्शे-हिलाल[4] होगा
है उसके हक़ में हर शब मानिन्द रोज़े-महशर[5]
जिसकूँ फ़िराक़े-जानाँ[6] सीने का साल होगा
मअ़नी के जो चमन में है बुलबुले-मुआ़नी[7]
तुझ गुलबदन के देखे रंगीं ख़याल होगा
ज्यों शमअ-ए-गुल पड़ेंगे, शर्मिन्दगी सूँ गुलरु
जिस अंजुमन में हाज़िर गोबिन्द लाल होगा
अलबत्ता वसफ़[8] तेरा लावेगा हर सुख़न में
जो शेर में 'वली'-सा साहिब-कमाल होगा

बायसे - नशा दो बाला है
हसीने-सूरत के साथ हसीने-अदा

---

१. लाल जवाहिर, प्रिय के लाल होंठ २. सुन्दर चाँद, चाँद-सा सुन्दर प्रिय ३. प्रकाश की चमक ४. ईद के चाँद का चित्र ५. प्रलय का दिन ६. प्रिय-विरह ७. इच्छित ८. प्रशंसा।

तुझ हुस्ने-आलम ताब का जो आशिक़े-शैदा[1] हुआ
हर ख़ूबरु[2] के हुस्न के जल्वे सूं पेपरवाह हुआ
देखा है तेरी ज़ुल्फ़ के हल्क़े को जिनने यक नज़र
तुझ ख़ाल[3] के नुक़्ते नमन वो बे-सरो-बे-पा हुआ
जिस वक़्त सूँ तुझ क़द के तईं लाए हैं शायर फ़िक्र कर
उस वक्त सूं आलम मने निरख़े-सुख़न बाला[4] हुआ
है सलह[5] कल के गौहराँ मेरे सुख़न सूं जल्वागर
अज़ बस कि वसहते-मशरबी[6] सूँ दिल मेरा दरिया हुआ
पाया है जग में ऐ 'वली' वो लैला-ए मक़सूद को
जो इश्क़ के बाज़ार में मजनूं नमन रुसवा हुआ

जब सनम कूं ख़याले-बाग़ हुआ
तालबे-नश्श-ए-फ़राग़ हुआ
फौजे-उश्शाक़ देख हर जानिब
नाज़नीं साहिबे-दिमाग़ हुआ
रश्क़ सूं तुझ लबाँ की सुर्ख़ी पर
जिग़रे-लाला दाग़-दाग़ हुआ
दिले-उश्शाक़ क्यों न होवे रोशन
जब ख़याले-सनम चिराग़ हुआ
ऐ 'वली' गुलबदन कूं बाग़ में देख
दिले-सदचाक बाग़ बाग़ हुआ

---

१. प्रेमी, मस्त २. सुन्दर ३. नक्श, चेहरा ४. बड़ा, अधिक ५. प्रसिद्ध ६. पीने के स्थान पर फिराग़दिली।

गमज़ाँ[1] की फ़ौजाँ बाँध कर आए हैं रावत[2] नयन के
हर मू पलक का हाथ में उनके सू ज्यूं भाला हुआ

जल्वागर जब सूँ वो जमाल[3] हुआ
नूरे - खुर्शीद पामाल हुआ
फ़ैज़े - तशबीहे - क़दे - दिलबर[4] सूँ
सर्व गुलशन मने निहाल हुआ
नशा - ए - सब्ज़िए - ख़ते - ख़ूबाँ[5]
वाली आलमे - ख़याल हुआ
याद कर तुझ भवाँ की बेते - बुलन्द[6]
महे - नौ साहिबे - कमाल हुआ
देखकर तुझ निगह की शोख़ी
होशे - आशिक़ रमे - ग़ज़ाल हुआ
हुस्न उस दिलरुबा का मुद्दत सूँ
अक़्से - आईना - ए - ख़याल हुआ
वसफ़ में तुझ भवाँ के हर मिस्रा
सानि-ए-मिस्रा-ए हिलाल हुआ
जिन ने देखा है तुझ निगह की तेग़
फिर के जीना उसे मुहाल हुआ
अज़ल[7] मजनूं के बाद मुझ कूं 'वली'
सूबा - ए - आशिक़ी बहाल हुआ

---

१. संकेत २. सैनिक ३. प्रकाश, प्रिय ४. दिलबर से उपमा देने का फायदा ५. सुन्दर प्रिय के मुख पर तिल देखने से नशा ६. छन्द ऊंचा हुआ, अच्छी कविता लिखी ७. मृत्यु।

वो मिरा मक़सूदे-जानो-तन हुआ
जिसका मुझ कूं रात-दिन सिमरन हुआ
मशल मीना-ए-शराबे[1] - बज़्मे-हुस्न[2]
हौज़े-दिल तुझ अक्स सूं रौशन हुआ
नूर का है गंज तेरा यो जमाल
हुस्न के गौहर का तूं मुअदन[3] हुआ
बस कि यादे-हुस्न सीरतबख़्श[4] है
दिल मिरा साफ़ी[5] में ज्यूं दरपन हुआ
जो 'वली' है मरजहा[6] हर जज़ो-गुल[7]
वो मेरा मक़सूदे-जानो-तन हुआ

फिर मेरी ख़बर लेने वो सय्याद न आया
शायद मिरा हाल उसे याद न आया
मुद्दत सती मुश्ताक़ हैं उश्शाक़ जफ़ा के
बेदाद कि वो ज़ालिमे-बेदाद न आया
जारी किया हूँ जुए-रवाँ अश्के-रवाँ[8] सूं
अफ़सोस कि वो ग़ैरते-शमशाद[9] न आया
जिस ग़म मने मोज़ूं किया हूँ आह का मिस्रा
वो मिस्र-ए-दिलचस्प परीज़ाद न आया
पहुँची है हरेक गोशे में फरियाद 'वली' की
लेकिन वो सनम सुनने कूं फरियाद न आया

---

१. शराब की सुराही २. हसीनों की सभा ३. आमादा करने वाला ४. अच्छी आदत, स्वभाव ५. साफ़ ६. बढ़कर ७. फूलों से भी ८. बहते आँसू ९. शमशाद के पेड़ की ऊँचाई को शर्माने वाला, प्रिय।

क्यों आशिक़ाँ की सफ़ में पावें वो सुर्खरुई
जिनकीअँखियाँ के ऊपर ख़ूने-जिगर न आया

सद-हैफ़[१] कि वो यार मेरे पास न आया
मेरा सुखने-रास्त[२] उसे रास न आया
बेगानी लगी बात यगाने[३] की अजब है
आखिर कूँ उसे ग़ैर सूँ विसवास न आया
बुलबुल कीनमत नाला-ओ-ज़ारी में हूँ निसदिन
अफ़सोस वो गुलदस्ता-ए-खुशबास[४] न आया
उस यार-वफ़दार सूँ मुझ आस थी लेकिन
हर्गिज़ वो बुझाने कूँ मेरी प्यास न आया
मैं अम्ब-नमत तन कूँ लगाया हूँ अपस के
वो बाग़े-मुहब्बत का अनानास न आया
जिस बाज मेरे सीने पे हर आन है यक साल
उस माह बिना तन में मिरे मास न आया
यो बात 'वली' दिल की स्याही सूँ लिखा हूँ
वो नूरे-नयन हैफ़ मेरे पास न आया

आज तुझ याद ने ऐ दिलबर शीरीं हरकात
आह कूँ दिल के ऊपर तेशा-ए-फरहाद किया

---

१. अफ़सोस २. अच्छा सुखन, प्रेम भाव ३. रिश्ते ४. सुगन्धित फूलों का गुलदस्ता, फूल-सा सुन्दर प्रिय।

मस्ती ने तुझ नयन की मुझे बेखबर किया
दिल कूं मिरे भवाँ ने तिरी ज्यूं भँवर किया
तेरी निगह के तीर की हैबत[1] कूं दिल में रख
सूरज ने तन अपस का सरासर सपर[2] किया
तुझ मेहर का हुआ है दिलो-जाँ सूं मश्तरी[3]
जब सूं तेरे जमाल पे मैंने नज़र किया
तब सूं हुआ है महमले-लैला[4] की शक्ल दिल
जब सूं तिरे ख़याल ने दिल में गुज़र किया
ज्यों सर्व बेख़िज़ाँ हैं जहाँ में, वो सब्ज़-बख़्त[5]
तेरे क़दे-बुलन्द पे जिन ने नज़र किया
हर शब तिरी ज़ुल्फ सूं मतवल[6] की बहस थी
तेरे दहन कूं देख सुख़न मुक्तसर किया
हक़ तुझ अज़ार[7] देख के सरजा है रंगे-गुल
पैदा तिरे लिबास सती शहदो-शकर किया
देखा है यक निगाह में हक़ीक़त के मुल्क कूं
जब बेख़ुदी की राह में दिल ने सफ़र किया
तेरा यो शेर जग में मवसर[8] है ऐ 'वली'
तू दिल मने हरएक के जाकर असर किया

---

१. डर २. अस्त ३. गाहक ४. ऊँट सवार, लैला, भयभीत
५. सौभाग्यवान ६. लम्बाई, लम्बा किया हुआ ७. गाल
८. प्रभावपूर्ण।

कश्वरे[1]-दिल कूँ तिरे नाज़ ने तस्ख़ीर[2] किया
फौजे-मजनूँ कूँ तिरी ज़ुल्फ़ ने ज़न्ज़ीर किया
पेच सूँ नक़दे-दिल आशिके-बेताब कूँ ले
ज़ुल्फ़ कूँ अपनी परीरू ने गिरहगीर[3] किया
आशिके-ज़ार समझ मुझ सूँ हुआ है बेज़ार
नक़दे-दिल दे के मैं दिलदार कूँ दिलगीर[4] किया
नाला-ए-शौक़[5] ने शौले की ज़बाँ सूँ ज्यूँ बर्क़[6]
दरस में शोख़ के आशिक़ की तक़रीर किया
क्योंकि ज़राते-जहाँ[7] तुझकूँ परस्तश[8] न करें
हक़ ने तुझ हुस्न कूँ खुर्शीदे-जहाँगीर[9] किया
ग़र्दे-ग़म[10], आबे-नयन[11] दर्द के महमार[12] ने ले
ख़ाना-ए-इश्क़ जिगर सोज़ कूँ तहमीर[13] किया
ऐ 'वली' शोख़ की ज़ुल्फाँ की सियाही लेकर
किस्सा-ए हाले-परेशाँ कूँ मैं तहरीर किया

वो भवाँ हम सूँ क्यों न हों बाँकी
माहे-नौ ने जिसे सलाम किया
ग़मज़ए-शोख़ ने ब-नीमे-निगाह
काम उश्शाक़ का तमाम किया

---

१. दिल का देश २. बेग़ार ३. सम्भाल लिया ४. उदास ५. शोक के कारण रोना ६. बिजली ७. संसार के कण, तत्त्व ८. पूजा ९. खुर्शीद के समान ऊँचा, बड़प्पनयुक्त १०. ग़म की धूल ११. आँसू १२. निर्माता, राज, मिस्तरी १३. निर्माण।

तेरे मुख पर ऐ नाज़नीं यो नक़ाब
झलकता है ज्यों मतलुह[1]-ए आफ़ताब
अदा फ़हम के दिल की तस्ख़ीर[2] कों
तिरा क़द है ज्यूं मिस्रा-ए इन्तख़ाब[3]
बजा है तिरे हुस्न की ताब सूँ
तिरी ज़ुल्फ़ खाली है गर पेचो-ताब
नज़र करके तुझ मुख की साफ़ी[4] उपर
हुई शर्म सूँ आरसी ग़र्क़े-आब[5]
तिरे अक्स पड़ने सूँ ऐ गुलबदन
अजब नहिं अगर आब होवे गुलाब
तिरे वस्ल में इस क़दर है निशात[6]
कि मख़मल कूँ आए हैं राहत सूँ ख़्वाब
करें बख़्त[7] मेरे अगर टुक मदद
'वली' उस सजन सूँ मिलूँ बेहिजाब

जब सूँ वो नाज़नीं की मैं देखा हूँ छब अजब
दिल में मिरे ख़याल हैं तब सूँ अजब-अजब
जाता है दिन तमाम उस मुख की याद में
होता है फ़िक्रे-ज़ुल्फ़ में अहवाले-शब अजब

१. उगता सूर्य २. बेग़ार ३. चुनाव, संकलन ४. सफ़ाई, सुन्दरता ५. पानी-पानी, शर्मिन्दा ६. खुश ७. भाग्य।

ज़बाने हाल सूँ कहता है यूँ शमशाद[1] हर सायत[2]
पड़ेंगे कैद में उस क़द कूँ देख आज़ाद हर सायत
बचेगा कब तलक ऐ तायरे-दिल[3] रोज़ वहशत सूँ
निगह का दाम[4] ले आता है वो सय्याद हर सायत
हुआ है जब सति परवाना दिल ऐ शमआ-रु तेरा
न कि तुझ चश्म की जाती है बहरे-साद[5] हर सायत
अपस की चश्मे-मै कूँ सूँ दिखाकर गर्दिशे-साग़र
सनम करता है मेरे होश कूँ बरबाद हर सायत
तेरा ख़त ख़ौफ़ में है हाथ सूँ मक़राज़[6] के दायम
कि ज्यूं रखता है कूवक[7] वहशते-उस्ताद हर सायत
नहीं यक आशिक़ो-माशूक़ उसके दर्द सूँ खाली
गुलो-बुलबुल सूँ सुनता हूँ यही फ़रियाद हर सायत
'वली' मुझ दिल में बस्ता है ख़याल उस सर्व क़ामत[8] का
कि जिसके शौक़ सूँ जुम्बश में है शमशाद हर सायत

गुमराह हैं तुझ ज़ुल्फ़ में कई अहले-हिदायत[9]
यह बाट है ज़ुल्मात की नहिं जिसकूँ निहायत[10]
ग़मज़ो ने किया ज़ुल्म मिरे दिल पे सो तिस पर
करते हैं तेरे नयन वो ज़ालिम की हिमायत

१. ऊँचा वृक्ष, सर्व जैसा २. तरफ ३. पतंग रूपी दिल ४. फन्दा ५. समुद्र-सी फैली ६. काटने का औज़ार ७. छोटा बालक ८. सर्व जैसा ऊँचा क़द, सुन्दर प्रिय ९. हिदायत करने वाले, उपदेशक १०. अत्यधिक।

उश्शाक़ का है खून रवा इश्क़ की रह में
तुझ नयन के मुफ़्ती[1] सूँ सुनया हूँ यह रवायत[2]
यो मुख है तिरा मुस्हफ़े-अनवार-इलाही[3]
नाज़िल[4] है तिरे हुस्न पे सब हक़ की इनायत
हर दर्द पे कर सब्र 'वली' इश्क़ की रह में
आशिक़ कूँ न लाज़िम है करे दुख की शिकायत

मिलता नहीं मुझ सूँ वो दिलदार अल्ख़यास[5]
उस बेवफ़ा के जोर सूँ सदवारे अल्ख़यास
मुझ दिल का देख हाल परेशाँ हो आप सूँ
करते हैं तेरी ज़ुल्फ़ के हरतार अल्ख़यास
नहिं देखता है बाग़ में नर्गिस कूँ ऐ सनम
तेरी अँखियाँ का आज तलबगार अल्ख़यास
तेरी नयन कूँ देख के गुलशन में गुलबदन
नर्गिस हुआ है शौक़ सूँ बीमार अल्ख़यास
बाज़ार में जहाँ के नहीं कोई ऐ 'वली'
तेरे सुख़न का आज ख़रीदार अल्ख़यास

तुझ शमा-रु से रोशन होती है शब की मजलिस
माशूक चाहते हैं परवानगी वहाँ की

---

१. न्यायाधीश २. रिवाज़, ढंग ३. इलाही का प्रकाश, सौन्दर्य
४. प्रगट ५. दुहाई।

शोख़ मेरा बे-मया है अलख़यास
साहिबे-जोरो-जफ़ा है अलख़यास
वो सनोबर क़मते-गुलज़ारे-हुस्न
महश्रे[1]-नाज़ो-अदा है अलख़यास
उस कमाँ-अब्रू का हर तीरे-निगह
ज्यों खदङ्गे-बेख़ता[2] है अलख़यास
पायमाले-क़ातिले रंगीं-अदा[3]
ख़ूने-आशिक़ ज्यूँ हिना है अलख़यास
हूँ पिया के शरबते-लब बिन मरीज़
जिस नयन गुलकन्द-सा है अलख़यास
जिन ने दीवाना किया है ख़ल्क कूँ
वो परी-रु क्या बला है अलख़यास

तुझ नयन में जी दामे-मुहब्बत[4] देखा
तुझ लब मने दिल-जामे मुरव्वत देखा
तुझ मुख के भीतर रोज़ दिसा रोशन मुझ
तुझ ज़ुल्फ़ में दिल शामे-मुशक्कत देखा

मुख तिरा बहरे-हुस्न[5]-ओ ज़ुल्फ़ाँ मौज[6]
गर्दिशे-चश्म ऐन तूफ़ाँ है

१. प्रलयङ्कर २. अचूक तीर ३. नाश तथा क़त्ल करने वाली कटाली अदा ४. प्रेम-जाल ५. सौन्दर्य-सागर ६. लहर।

है जल्वागर सनम में बहारे-अताब[1] आज
लेना है उसके नाज़ो-अदा का हिसाब आज
आलम का होश क्योंकि रहेगा अजब हूँ मैं
चिकना है उसके नयन सूँ रंगे-शराब आज
क्या नाज़, क्या ग़रूर है उस नौबहार में
देता नहीं सलाम का मेरे जवाब आज
क्यों मू-नमन[2] ज़हीफ़[3] न हों ग़म सूँ ऐ सनम
तेरी कमर ने मुझ कूँ दिया पेचो-ताब आज
तेरे रंगे-लबाँ के, कि हैं चश्मा-ए-हयात[4]
लगता है आबे-ख़िज़्र[5] मशाले-सुराब[6] आज
उसकी निगाहे-मस्त सूँ मालूम यूँ हुआ
अक्सर करेगी ख़ाना-ए-आशिक़ ख़राब आज
एजाज़े-हुस्न[7] देख कि वो रोए बा-अरक़[8]
पैदा किया है चश्मा-ए-आतिश[9] सूँ आब आज
क्या बेख़बर हो ऐ मुहल्लम[10] सनम कूँ देख
मक्तब[11] में उसके भूल गया है किताब आज
मालूम नहीं कि हाथ में शमशीर ले सनम
आता है किसके कत्ल कूँ ऐता शिताब आज
क्यों आरज़ूए-वस्ल करूँ उस सूँ ऐ 'वली'
देता नहीं है नाज़ सूँ सीधा जवाब आज

---

१. गुस्से की बहार, चमक २. बाल के समान ३. दुबला, पतला ४. अमृत का स्रोत ५. अमृत ६. रेगिस्तान ७. आदत को पूछने की शक्ति ८. पसीना होकर ९. ज्वालामुखी १० आलिम-फ़ाज़िल, ज्ञानी ११. स्कूल।

मैं आशकाँ की फौज का सरदार हूँ 'वली'
मुझ आह का हुआ है इल्म ता-आस्माँ[1] बुलन्द

तेरी निगह की सख्ती है दिलबरी की मानिन्द
तेरी निगह मोज़ूँ है अबहरी[2] की मानिन्द
ज़ाहिर नहीं किसी पर तुझ लाल की हक़ीक़त
वाकिफ़ हुआ हूँ इस सूँ मैं जौहरी की मानिन्द
हर चन्द रंगे-ज़र्दी हासिल है आशिक़ों कूँ
लेकिन शिगफ़्तारु[3] हैं गुले-जहफ़री की मानिन्द
ताक़त नहीं किसी कूँ ता उस सनम कूँ देखे
आलम की है नज़र सूँ पिन्हाँ[4] परी की मानिन्द
यह रेख्ता[5] 'वली' का जाकर उसे सुनाओ
रखता है फिक्र रोशन जो अनवरी[6] की मानिन्द

मुश्ताक़ तुझ दरस का ऐ शमा बज़्मे-खूबी[7]
देखा नहीं हैं दूजा हर्गिज़ 'वली' की मानिन्द

मुख तिरा ज्यों रोज़े-रोशन, ज़ुल्फ़ तेरी रात है
क्या अजब यह बात है यक ठार दिन ओ रात है

---

१. आकाश तक २. सुगन्धित, सफ़ूफ ३. खिला हुआ ४. छिपा हुआ ५. उर्दू की कविता ६. प्रकाश ७. सभा की सुन्दरता।

अब जुदाई न कर ख़ुदा सूं डर
बेवफ़ाई न कर ख़ुदा सूं डर
रास्त केशाँ[1] ऐ कमाँ अबरु
कज अदाई[2] न कर ख़ुदा सूं डर
मत तग़ाफ़ुल[3] कूं राह दे ऐ शोख़
जग-हँसाई न कर ख़ुदा सूं डर
है जुदाई में ज़िन्दगी मुश्किल
आ जुदाई न कर ख़ुदा सूं डर
आशकाँ कूं शहीद करके सनम
कफ़-हिनाई[4] न कर ख़ुदा सूं डर
आरसी देख कर न हो मग़रूर
ख़ुदनुमाई[5] न कर ख़ुदा सूं डर
उस सूं जो आशनाए-दर्द नहीं
आशनाई न कर ख़ुदा सूं डर
रंगे आशिक़ ग़ज़ब सूं ऐ ज़ालिम
कहरबाई न कर ख़ुदा सूं डर
ऐ 'वली' ग़ैर-आस्तान-ए-यार[6]
जबहसाई[7] न कर ख़ुदा सूं डर

ऐ सनम, आया हूँ हो बे अख़्तियार
तुझ कूं अपना राहते-जाँ[8] बूझ कर

१. सुलझे केश २. टेढ़ी अदा ३. कल्पना ४. मेहँदी की झाग ५. आत्म-अभिव्यक्ति, गुमान ६. यार की चौखट ७. माथा रगड़ना ८. जान का चैन।

पड़ा हूँ कोह-ग़म[१] में इस दिले-नाशाद[२] सूँ जाकर
दुआ बोलो मिरी जानिब सूँ कुई फरहाद सूँ जाकर
बिरह के हाथ सूँ गरदाबे-ग़म[३] में जा पड़ा है दिल
कहो मेरी हक़ीक़त चर्ख[४] बेबुनियाद सूँ जाकर
गिरफ़्ताराँ की ग़मख्वारी इता लाज़िम हुई तुझ पर
हक़ीक़त मर्गे-दिल[५] की यूँ कहो सय्याद सूँ जाकर
किया है खून ने सौदा[६] के ग़ल्बा तन मने मेरे
निगह के नश्तरे कूँ ला कहो फ़स्साद[७] सूँ जाकर
'वली' उस क़द का तालिब है मुबारिकवाद आ बोलो
कहो समझा के गुलशन में हर इक शमशाद सूँ जाकर

आजज़ाँ[८] के ऊपर सितम मत कर
इस क़दर सख्ती ऐ सनम मत कर
इस तरक्क़ी के वक़्त में ऐ शोख़
मेहरबानी अपस की कम मत कर
रहम बेजा सितम बराबर है
यूँ रक़ीबाँ ऊपर करम मत कर
इस नसीहत कूँ गोशे-जाँ[९] सूँ सुन
दिल कूँ अपने मकाने-ग़म मत कर
शम[१०] तुझ अमर का हुआ है 'वली'
गर है इन्साफ़ उस सूँ रम[११] मत कर

---

१. ग़म के पहाड़ २. नाखुश दिल ३. ग़म के बुलबुले ४. आकाश ५. मरे हुए दिल ६. उन्माद, पागलपन ७. खून लेने वाला ८. कमज़ोर ९. मन से १०. ताबेदार, कृपाकांक्षी ११. गिला।

ज़ुल्फ़ तेरी क्यों न खावे पेचो-दाब
हाल मुझ दिल का परेशाँ बूझ कर
रहम कर उस पर कि आया है 'वली'
दर्दे-दिल का तुझ कूँ दरमाँ[1] बूझकर

चमन में जब चले उस हुस्ने-आलम ताब सूँ उठकर
करे तहज़ीम[2] खुशबू हर गुले-सेराब[3] सूँ उठकर
करे गर आरसी घर में लिजा तुझ मुख की महमानी
धुलावे हाथ कूँ तेरे अपस के आब सूँ उठकर
तिरे अबरु की गर पहुँचे ख़बर मस्जिद में ज़ाहिद[4] की
तमाशा देखने आवे तिरा महराब[5] सूँ उठकर
तेरे पावाँ की नरमी की अगर शोहरत हो आ़लम में
वहीं आवे क़दम-बोसी[6] कूँ मख़मल ख्वाब सूँ उठकर
'वली' तुझ ज़ुल्फ़ की गर सहर-साज़ी[7] का बयाँ बोले
चले पाताल सूँ बासक[8] सौ पेचो-ताब सूँ उठकर

तुझ मुख का है यह फूल चमन की ज़ीनत[9]
तुझ शमआ का शौला है अगन की ज़ीनत
फिरदौस[10] में नर्गिस ने इशारे सूँ कहा
"यह नूर है आ़लम के नयन की ज़ीनत"

---

१. इलाज २. आदर ३. प्यासरहित या खिले फूल ४. उपदेशक ५. टेढ़ा नाक ६. कदम चूमने को ७. घूंघर ८. बासुकी, नागराज ९. शोभा १०. स्वर्ग ।

जो आया मस्त साक़ी जाम ले कर
गया यक बारगी आराम ले कर
निगह तेरी सदा आती है ज्यूं तीर
दिले-ज़ख्मी तरफ़ पैग़ाम ले कर
न जानूं ख़त तिरा किस बेख़ता पर
चला है आज फौजे-शाम[1] ले कर
उड़ा आहूए-दिल[2] सूं रंगे-वहशत[3]
जो आई ज़ुल्फ़ तेरी दाम[4] ले कर
जू कुई बाँधा है तेरी ज़ुल्फ़ में दिल
सटा है कुफ़्र[5] में इस्लाम ले कर
तिरे लब होर तिरी अँखियाँ कूं हदिया[6]
चला हूँ पिस्त-ओ बादाम लेकर
बनाई है जहाँ में लैलत-उक-कदरे[7]
सियाही तुझ ज़ुल्फ़े की दाम ले कर
तिरी साक़ीगरी कूं लाल-ए-बाग़
खड़ा है मुन्तज़र हो जाम ले कर
मैं उस कूं ज्यों नगीं करता हूँ सिजदा
जू कुई आता है तेरा नाम ले कर
'वली' तेरे लबाँ सूं ऐ तुनके-तबीह[8]
चला लज़्ज़ते-दुश्नाम ले कर

१. अँधेरे की सेना २. मन रूपी हिरन ३. डरा दिल ४. फन्दा ५. नरक ६. भेंट ७. काली रात ८. तुनुक मिज़ाज।

मत जा सजन कि होशे-दिल आया नहीं हनूज़[1]
मैं दर्द अपस का तुझ कूं सुनाया नहीं हनूज़
इस चश्मे-अश्कबार[2] सूं मेरी अजब न कर
सीने का दाग़ तुझ दिखाया नहीं हनूज़
तुझ लुत्फ़ के ज़लाल ने ऐ माह-ए-हयात[3]
मेरे सिने की आग कूं बुझाया नहीं हनूज़
हूँ गर्चे ख़ाकसार वले अज़रहे-अदब[4]
दामन कूं तेरे हाथ लगाया नहीं हनूज़
अपनी अँखाँ के नूर कूं तेरे क़दम तले
ऐ नूर, दीदहे-फ़र्श बिछाया नहीं हनूज़
ज़ाहिद अगर्चे फ़हम[5] में है बू-अली-ए-वक़्त[6]
मेरे सुख़न के रम्ज़[7] कूं पाया नहीं हनूज़
आज़ाद अपने इश्क़ सूं मत कर 'वली' के तईं
तेरा ग़ुलाम जग में कहाया नहीं हनूज़

मुझ दिल कूं डसने ऐ सनम, तुझ ज़ुल्फ का यक तार बस
करने मुझे क़ैदे-फ़रङ्ग तुझ ज़ुल्फ का ज़ुन्नार बस
हर्गिज़ न देखूंगा सजन जन्नत के मैं गुलज़ार कूं
रोज़े-अज़ल[8] सीं मुझ कूं है तुझ हुस्न का गुलज़ार बस
ख़ते-ग़ुलामी लिख दिया कल तुझ कूं ऐ नाज़ुक बदन
उसके लिखे का हश्र लग हैगा मुझे इक़रार बस

---

१. अभी २. बहती आँखें ३. पूर्णमाशी का चाँद, चाँद-सा सुन्दर प्रिय ४. अदब की राह में ख़ाक समान ५, ६. समय के लालच में कोयला, जला हुआ ७. तौर, भाव ८. प्रलय के दिन।

है ज़ाहिदों के हाथ में तस्बीह नित इस्लाम की
उस काफ़िरे-बद-कैश[१] के काकल[२] का मुझ जुन्नार बस
उस आरसी कूँ हाथ में क्यूँकर रखूँ आख़िर 'वली'
है शौक सीं तुझ हुस्न के दरपन का मुझ दीदार बस

मैं जब सती देखा हूँ बहारे - गुले - नर्गिस[३]
है वहशि-ए-दिल[४] तब सूँ शिकारे-गुले-नर्गिस
क्यों बारे-निगह हुए तुझ अँखियाँ के चमन में
पलकाँ हैं मिरी ख़ार हिसारे[५] - गुले - नर्गिस
बीमार है ऐ यार तिरी चश्म के दूराँ
आ देख टुक यक दीदा-मू-ज़ारे[६]-गुले-नर्गिस
नर्गिस ने किया उसके नयन देख ज़ेर-ऐसार[७]
कर नक़्दे-दिल अपने कूँ निसारे-गुले नर्गिस
आया है 'वली' मुतलहे-रंगीं[८] ले तिरे पास
यो मुतलहे - रंगी ले बहारे - गुले नर्गिस

तुझ इश्क़ सूँ नित बे-सरो-सामाँ हूँ मैं
तुझ ज़ुल्फ सूँ बेताब ओ-परेशाँ हूँ मैं
तुझ मुख की सफ़ाई[९] कूँ नज़र में रखकर
मुद्दत सती ज्यूँ आईना-ए हैराँ हूँ मैं

---

१. अधर्मी २. बालों की लट ३. नर्गिस के फूल, नर्गिस के फूल से कोमल प्रिय की बहार ४. दिल की मस्ती ५. गढ़ी ६. आँख के बाल, पलकों में ७. बुज़ुर्गी के अन्दर ८. रंगीन मतला, छन्द या भाव ९. सुन्दरता ।

शोख़ आता नहीं हज़ार अफ़सोस
मुख दिखाता नहीं हज़ार अफ़सोस
मतरबे-नग़्मा-ए-साज़[1] महफ़िले-इश्क़
तान गाता नहीं हज़ार अफ़सोस
बज़्मे-इशरत[2] में जाम लब सूँ पिया
मैं पिलाता नहीं हज़ार अफ़सोस
वो सजन नाज़ सूँ भली बाताँ
मन में लाता नहीं हज़ार अफ़सोस
पेम[3] नगरी की राहे-ग़ैर 'वली'
कोई पाता नहीं हज़ार अफ़सोस

मुद्दत सती ऐ गुलबदन छोड़ा चमन की सैर कूँ
मुश्ताक़ हूँ तुझ दरस का मुझ कूँ चमन से क्या ग़रज़

सदा जिसके दिल में रहे यादे-यार
वो रो-रो फिरे हिज्र सूँ ज़ार-ज़ार
न होवे उसे जग में हर्गिज़ करार
जिसे इश्क़ की बेक़रारी लगे

१. इश्क़ की महफ़िल में नग़्मा गाने वाले, मिरासी २. इशारों की अनेकता, सभा ३. प्रेम।

सजन की तेग़े-अबरु[1] सूँ शहादत गाह[2] पाऊँ मैं
मिरे इस क़त्ल होने पर शहीदे-करबला हाफ़िज़[3]

दूजा नहीं कुछ मुद्दआ इस आशिके-जाँबाज़ को
है आरज़ू दिल में मिरे पीतम को मिलने की फ़क़त
दखनी-ज़बाँ में शेर सब लोगाँ कहे हैं ऐ 'वली'
लेकिन नहिं बोला है कुई यक शेर खुश्तरज़ीं नमत

इश्क़ की आग सूँ जली है शमा
सर सती ता-क़दम गली है शमा
ख़ब्ज़े - इश्क़[4] सूँ कटा सर कूँ
मर्गे-बिस्मिल[5] हो तलमली है शमा
जब सती देखा तिरे नूर के तईं
यक क़दम कहीं नहीं चली है शमा
तुझ लगन के बीच बस कि है साबित
जलने सेती नहीं टली है शमा
क्यों न रोशन हो बज़्मे-हुस्न[6] 'वली'
यार के मुख सेती मिली है शमा

---

१. तीखी भँवें २. बलिदान-मण्डप ३. कर्बला पर शहीद होने वाले मुहम्मद साहब, मालिक, गवाह ४. इश्क़ की ख़ब्त ५. मृत्यु का दुःख ६. सौन्दर्य-सभा।

इश्क़ के रम्ज़[1] सूँ नहीं आगाह
क्या हुआ तूँ किया किताबाँ जमा

वो आबो-ताब हुस्न में तेरे है ऐ सजन
खुर्शीद जिस कूँ देखकर लरज़ाँ है ज्यों चिराग़

पड़ी जब नज़र चश्मे-दिलबर तरफ़
हुआ होश यक बारगी बर-तरफ़
'वली' को नहीं माल की आरज़ू
खुदा दोस्त नहीं देखते ज़र तरफ़

तुझ दहन का कलाम वो बूझे
हक़ ने बख़्शा है जिसकूँ फ़िक्रे-अमीक़[2]
ऐ 'वली' आरज़ू सदा है यही
कि मिले मुझ सूँ वो रफ़ीके-शफ़ीक़[3]

देख तुझ में जमाले-हक़[4] का ज़हूर[5]
हैं दुआगो[6] फ़लक पे सारे मलक[7]

---

१. ढंग, तौर २. गहरी चिन्ता ३. मेहरबान साथी ४. उचित प्रकाश ५. अभिव्यक्त ६. प्रार्थनारत ७. फ़रिश्ते।

मेरी निगह की रह पे ऐ फ़ख़न्दे-फ़ाल[१] चल
है रोज़े - ईद आज ऐ अबरु - हलाल[२] चल
तेरे नयन की दीद कूँ ऐ नूर हर नज़र
शक नहीं अगर ख़तन-सती[३] आवें ग़ज़ाल चल
मुमकिन नहीं है तन की तरफ उसकी बाज़े-गश्त
जो दिल गया है दिलबरे-दिलकश की नाल चल
पीतम की ज़ुल्फ़ बीच बसा मुझ सवा दिहन्द
इस राहमार बीच में ऐ दिल सम्भाल चल
वहदत[४] के मैकदे[५] में नहीं बार होश कूँ
इस बेख़ुदी के घर की तरफ सुद्ध को ढाल चल
ऐ बेख़बर अगर है बुज़ुर्गी की आरज़ू
दुनिया की रहगुज़र में बुज़ुर्गां की चाल चल
गर आक़बत[६] के मुल्क ख़्वाहिश है सल्तनत
ख़ुश-ख़सलती के मुल्क में ऐ ख़ुश-ख़साल चल
मुर्शिद[७] की मंज़िलत का अगर इज़्मे-जज़्म[८] है
साया नमत तू पीर के दायम-बनाल चल
आया तिरी तरफ़ जू 'वली' तो अजब नहीं
आते हैं तुझ गली मने साहिब-कमाल[९] चल

---

१. शुभ शकुन २. पवित्र भँवों वाले ३. बस्तियों से ४. एकाकी-पन ५. मधुशाला ६. अंजाम ७. गुरु ८. शान्ति की इच्छा ९. बड़े लोग।

'वली' तेरी गली कूँ देख बोल्या
यही है हिन्द और कश्मीरो-क़ाबुल

तुझ मुख ऊपर है रंग शराबे-अयाग़े-गुल[1]
तेरी ज़ुल्फ है हल्क़-ए-दूदे-चिराग़े-गुल[2]
माशूक़ कूँ ज़रर[3] नहीं आशिक की आह सूँ
बुझता नहीं है बादे-सबा[4] सूँ चिराग़े-गुल
रहता है दिल पिया के तफ़हुस[5] में रात-दिन
है कारे-अन्दलीब[6] हमेश सुराग़े-गुल[7]
आशिक़ मदाम हाले-परेशाँ सूँ शाद[8] है
आशफ़्तगी[9] के बीच है दायम फ़राग़े-गुल[10]
तुझ दाग़ सूँ हुआ है चमन ज़ार दिल मिरा
ऐ शोख़ आके देख तमाशाए-बाग़े-गुल
जलते हैं पी के शौक़ सूँ उश्शाक़ रात-दिन
है दिल में बुलबुलाँ के शबो-रोज़ दाग़े-गुल
यूँ तुझ सुख़न में नशा-ए-मअ़नी है ऐ 'वली'
ज्यूँ रंगो-बू[11] की मै सूँ है लबरेज़ अयाग़े-गुल

'वली' शेर मेरा सरासर है दर्द
ख़तो-ख़ाल[12] की वात है ख़ाले-ख़ाल

---

१. फूलों की शराब का प्याला २. चिराग के गुल का धुआँ ३. दुःख ४. प्रातःकलीन हवा ५. खोज ६. बुलबुल का काम ७. फूल की खोज ८. खुश ९. बदहवासी १०. फूलों से विस्मृति ११. रंग तथा खुशबू १२. नयन-नक़्श।

...rary ... Pratap Collection

ख़ैर ख़्वाहाँ मैं हूँ ख़ुदा की क़सम
मान इस सादिके-आशना[1] की क़सम
कमनुमाई[2] कूँ मुद्दआ कर-कर
मत कहीं जा तुझे हया की क़सम
देख ऐ शोख़ तेरी बेबाकी
ख़ौफ़ में हूँ सदा रज़ा[3] की क़सम
यक क़दम छोड़ कर न जाऊँगा
मुझ कूँ है तेरी ख़ाके-पा की क़सम
लुत्फ़ सूँ आ तरफ़ शहीदों के
तुझ कूँ है शाहे-करबला[5] की क़सम
बस कि रखता हूँ तुझ क़दम की याद
दिल हुआ ख़ूँ मिरा हिना की क़सम
आशिक़ों कूँ नहीं है मौत सूँ काम
मरक़दे-पाक-औलिया[6] की क़सम
ख़ाकसारी है हक़ आगे मंज़ूर
ख़ाके-दरगाहे-मुस्तफ़ा[7] की क़सम
दिल सूँ अपने निकाल वहमो-ख़तर
राह सीधी है रहनुमा की क़सम
ऐ 'वली' इल्म सूँ यह हासिल है
गुले-गुलज़ार 'हुल-आई' की क़सम

---

१. सच्चा प्रेमी २. कमी का भाव ३. उम्मीद ४. पाओं की धूल ५. मुहम्मद साहब ६. पीर की दरगाह ७. मुस्तफ़ा की दरगाह की ख़ाक।

नाज़ मत कर तुझे अदा की क़सम
बेतकल्लुफ़ हो मिल ख़ुदा की क़सम
ज़ुल्फो-बरुख़ है तेरा जो लैलो-निहार[१]
मुझ कूँ वाललीलो-अलसिहा[२] की क़सम
सर्व कद कूँ कशीदहे-क़ामते-यार[३]
रास्त बोल्या हूँ तुझ अदा की क़सम
मसहफ़े-रुख़[४] तिरा है सूरते-फ़ख्र[५]
मुझ कूँ वा-अल नज़्मे-अज़ हव्वा की क़सम
ज़ुल्म मत कर सजन ! 'वली' ऊपर
तुझ कूँ है शाहे-करबला की क़सम

टुक 'वली' कूँ सनम गले सूँ लगा
तुझ कूँ है बन्दा परवरी की क़सम

मैखान-ए जग का जिसने सरजोश किया
उस हाथ सूँ आलम ने कदह[६] नोश किया
इस सयदे-आ़लम कूँ जो देखा यक बार
यकबारगी आ़लम कूँ फ़रामोश किया

---

१. काली ज़ुल्फें २. काले सियाह बाल ३. कढ़े हुए कपड़ों से सजा यार का कद ४. साफ़ा बाँधने का स्थान ५. अभिमान योग्य ६. शराब

ज्यूं गुल शिगफ़्तारु[1] हैं सुखन के चमन में हम
ज्यूं शमा सर बुलन्द है हर अंजुमन में हम
हम पास आ के बात नज़ीरी[2] की मत कहो
रखते नहीं नज़ीर[3] अपस के सुख़न में हम
हैं दास्तान बिरह मने मुझ याद कई हज़ार
उस्ताद बुलबुलाँ के हैं हरयक चमन में हम
ख़ूबाँ[4] जगत के ज्यों सूँ मिलते हैं हम सती
कामिल हुए हैं बस कि मुहब्बत के फ़न में हम
उस शोख़े - शौला - रंग सूँ जब सूँ लगन लगी
जलते हैं तब सूँ शौला नमन इस लगन में हम
यक बार हँसके बोल सनम नहीं तो हश्र लग
ज्यूं बर्क़[5] बेक़रार रहेंगे कफ़न में हम
हरचन्द जग के बख़्त बया-हू मैं है दिसे
काजल हो, जा बसे हैं सजन के नयन में हम
फ़रहाद तब सूँ तेशे - नमन[6] सर किया तले
बाँधे हैं जब सूँ जीव कूँ शीरीं-बचन[7] में हम
दो जग हुए हैं दिल सूँ फ़रामोश ऐ 'वली'
रखते हैं जब सूँ याद सरीजन की मन में हम

---

१. खिले हुए २. एक फ़ारसी का शायर ३. समान ४. सुन्दर ५. बिजली ६. तेसी के समान ७. मधुर-भाषी ।

शराबे-शौक़ सें सरशार[1] हैं हम
कभू बेखुद कभू हुशियार हैं हम
दोरंगी सूँ तिरे ऐ सर्व-रअ़ना[2]
कभू राज़ी, कभू बेज़ार हैं हम
तिरे तस्वीर करने में सरीजन
कभू नादाँ, कभू अय्यार हैं हम
सनम तेरे नयन की आरज़ू में
कभू सालम कभू बीमार हैं हम
'वली' वस्लो-जुदाई सूँ सजन की
कभू सहरा[3] कभी गुलज़ार हैं हम

तुझ क़द ऊपर जब सूँ पड़ी जग में निगाहे-आ़शिक़ाँ
तब सूँ गई तौबा-तलक ज्यूँ तीर आहे-आ़शिक़ाँ
ज्यूँ मुख तिरा यो देखकर माशूक़ सब आ़शिक़ हुए
तब सूँ तू मुल्के-हुस्न में है बादशाहे-आ़शिक़ाँ
साअ़त-शनासाँ[4] दंग हैं उश्शाक़ के अहवाल सूँ
यक-यक घड़ी तुझ हिज्र की है सालो-माहे-आ़शिक़ाँ
पहुँचे हैं मंज़िले-सालिकाँ[5] तुझ हुस्न के परतव सती[6]
यह नूर तेरा ऐ सजन, है शमआ़ राहे-आ़शिक़ाँ
वो यूसफे-कुनहाने-दिल[7] किस कारवाँ में है 'वली'
जिसके ज़नखुदाँ कूँ जगत बोले हैं चाहे-आ़शिक़ाँ

१. लबालब, पूर्ण २. सर्व के समान ऊँचे, सुन्दर ३. सूखे, मरुस्थल से ४. घड़ियाँ गिनने वाले ५. चलने वाले ६. साये से ७. हक़ीक़तबाज़ों का दिल।

सजन तुझ इन्तज़ारी में रहें निसदिन खुली अँखियाँ
मशाले शमआ़ तेरे ग़म में रो-रो बह चली अँखियाँ
हुई ज्यों जल्वागर तुझ याद सूँ मुझ दिल में बेताबी
तपीं शौला नमन गर्मी सूँ ग़म की तलमली अँखियाँ
जुदाई जब सूँ हुई ज़ाहिर तुधाँ सूँ पूछता है यूँ
तिरे बिन तेल के ज्यूँ मेल सुरमे की सिली अँखियाँ
तिरे बिन रात-दिन फिरतियाँ हूँ बन-बन किशन की मानिंद
अपस के मुख ऊपर रखकर निगह की बान्सली अँखियाँ
नज़क मेरे करम सूँ ताकि आवे बेहिजाब[१] होकर
तमाशे में तिरे ज्यूँ आरसी है सैक़ली[२] अँखियाँ
तिरी नयनाँ पे गर आहो-तसदक़[३] हो तो अचरज नहिं
कि इस कूँ देखकर गुलशन में नर्गिस ने मली अँखियाँ
इती ख़्वाहाँ हैं तुझ हुस्नो-मलाहत[४] होर लताफ़त[५] की
कि गोया दिल में रख्तियाँ हैं सदा फ़िक्रे-'वली' अँखियाँ

तेरी अँखियाँ के सामने सुर्मा हुआ हूँ मैं
ऐ संग दिल, हँसी कूँ तूँ ज़र्रा-नज़र में ला

तुझ गाल पर नों[६] का निशान दिस्ता मुझे उस धात का
रोशन शफ़क़[७] पर जगमगे ज्यों चाँद पिछली रात का

---

१. बेपर्दा २. बाड़ में रुकी, पर्दे में ३. बसीला, सदके करना
४. सलोनापन, लावण्य ५. सौन्दर्य ६. नाख़ून ७. आकाश।

आशिक़ के मुख पे नयन के पानी कूँ देख तूँ
इस आरसी में राज़े-निहानी[1] कूँ देख तूँ
सुन बेकरारे-दिल की अव्वल आह शौला खेज़
तब उस हर्फ़ में दिल की मुआनी[2] कूँ देख तूँ
ख़ूबी सूँ तुझ हज़ूर शमा दमज़नी[3] में है
उस बेहया की चर्बे-ज़बानी[4] कूँ देख तूँ
दरिया पे जाके मौजे-रवाँ पर नज़र न कर
अंझुवाँ की मेरे आके रवानी कूँ देख तूँ
तुझ शौक़ का जो दाग़ 'वली' के जिगर में है
बेताक़ती में उसकी निशानी कूँ देख तूँ

यक बार मेरी बात अगर गोश[5] करे तूँ
मिलने कूँ रक़ीवाँ के फ़रामोश करे तूँ
है बस कि तिरी नयन में कैफ़ीयते-मस्ती[6]
यक दीद[7] में कोनीन कूँ बेहोश करे तूँ
ऐ सर्वे-गुलअन्दाम[8] अपस नक़्शे-क़दम सूँ
बरजा है अगर सहन कूँ गुलपोश[9] करे तूँ
ग़ैरत सूँ करे चाके-ग़रेबाँ[10] दिले-पुर ख़ूँ[11]
गर गुल की हमायल[12] कूँ हम आगोश[13] करे तूँ
ऐ जाने-'वली' वादा-ए-दीदार कूँ अपने
डरता हूँ मबादा[14] कि फ़रामोश करे तूँ

१. गुप्त भेद २. मतलब, अर्थ ३. आहें, तेज़ साँस, भभकना ४. चिकनी, स्निग्ध ज़बान ५. मन में करना ६. मस्ती का हाल ७. एक नज़र ८. सर्व के फूल के समान ९. गुलज़ार १०. दामन फाड़ ११. ख़ूनी १२. बग़ल में १३. गोद में १४. ख़ुदा न करे ।

क्योंकर छुपा सकूँ मैं तुझ दर्द की हक़ीक़त
है काम आहे-दिल का अफ़शाए-राज़[1] करना
दर-वादिए-हक़ीक़त[2] जिनने क़दम रखा है
अव्वल क़दम है उसका इश्क़े-मजाज़ करना

हुआ है दंग बंगाला[3] तिरी नर्गिस के जादू सूँ
मुअत्तर[4] है सबा-ए-हिन्द[5] तेरी ज़ुल्फ की बू सूँ
क़सम तेरे तग़ाफुल[6] की कि नर्गिस की कलम लेकर
तिरी अँखियाँ के जादू कूँ लिखा हूँ खूने-आहो सूँ
किया है मिस्रा-ए-बर जस्ता-कौसे-क़ुजहा-मौजूँ[7]
फ़लक मज़मूने-रंगी ले गया तुझ बैते-अबरू[8] सूँ
सुख़न मेरा हुआ है तब सूँ बाला हर सुख़न ऊपर
लगा है ध्यान मेरा जब सती उस सर्व-दिलजू[9] सूँ
हुआ तुझ हुस्न पर दो जग दिवानागर ताजुब नहिं
अगर मुझसे दिवाने का बँधा दिल तुझ परीरू सूँ
मुझे गुलशन तरफ जाना बजा है ऐ महे-अनवर[10]
कि मैं पाता हूँ तुझ ज़ुल्फाँ की बू हर रात शबू[11] सूँ
'वली' हर शेर सूँ मेरे नज़ाकत जल्वा पैरा है
बजा है गर लिखूँ उस मू-कमर कूँ खाम-ए[12]-मू सूँ

---

१. भेद प्रगट २. वास्तविकता की वादियों में ३. जादूगर ४. सुगन्धित ५. भारत का वायु मण्डल ६. कल्पना ७. इन्द्रधनुष ८. भवों के छन्द से ९. सर्व-से ऊँचे-तगड़े सुन्दर दिलदार १०. बहार के चाँद ११. रात की रानी, एक फूल १२. बाल-सी बारीक कलम।

फ़िदाए-दिलबरे रङ्गीं अदा हूँ
शहीदे-शाहदे[1] गुलगूँ क़बा[2] हूँ
हर इक मै-रु के मिलने का नहीं ज़ौक[3]
सुख़न के आशना का आशना हूँ
किया हूँ तर्क नर्गिस का तमाशा
तलबगारे-निगाहे-बाहया हूँ
न कर शमशाद की तारीफ़ मुझ पास
कि मैं उस सर्व-क़द का मुब्तला हूँ
किया है अर्ज़ उस खुर्शीदरु सूँ
तू शाहे-हुस्न मैं तेरा गदा[4] हूँ
सदा रखता हूँ शौक़ उसके सुखन का
हमेशा तिश्न-ए-आबे-बक़ा[5] हूँ
क़दम पर उसके रखता हूँ सदा सर
'वली' हम मशरबे-रंगी-हिना हूँ

पढ़ते हैं 'वली' शेर तिरा अर्श में क़दीसी[6]
बाहिर है तिरी फ़िक्रे-रसा हदे-बशर[7] सूँ

साबित रहे क्यों रंग 'वली' उसका जहाँ में
देखा है जो दिलदार की ज़ुल्फाँ की शिकन कूँ

---

१. शहीद-गवाह २. फूल-सी पतली।प्रय ३. मज़ा ४. भिखारी
५. अमृत का प्यासा ६. फ़रिश्ते ७. मानवीय सीमा।

सजन के बाज आलम में दीगर[1] नहीं
हमन में है वले हम कूँ खबर नहीं
'वली' उसकी हक़ीक़त क्यों के बूझूँ
कि जिसका बूझना हद्दे-बशर[2] नहीं

मैं आशिक़ी में तब सूँ अफ़साना हो रहा हूँ
तेरी निगह का जब सूँ दीवाना हो रहा हूँ
ऐ आशना करम सूँ यक बार आ दरस दे
तुझ बाज सब जहाँ सूँ बेगाना हो रहा हूँ
बाताँ लगन की मत पूछ ऐ शमा-बज़्मे-ख़ूबी[3]
मुद्दत सूँ तुझ झलक का परवाना हो रहा हूँ
शायद वो गंजे-ख़ूबी[4] आवे किसी तरफ सूँ
इस वासते सरा-पा वीराना हो रहा हूँ
सौदाए-ज़ुल्फ़े-ख़ूबाँ[5] रखता हूँ दिल में दायम
ज़नखेर आशिक़ी का दीवाना हो रहा हूँ
बरजा है गर सुनूँ नहीं नासह तिरी नसीहत
मैं जामे-इश्क़ पीकर मस्ताना हो रहा हूँ
किस सूँ 'वली' अपस का अहवाल जा कहूँ मैं
सर-ता-क़दम मैं ग़म सूँ ग़मख़ाना हो रहा हूँ

---

१. दूसरा २. मानवी सीमा, शक्ति ३. सभा की शोभा ४. अथाह सौन्दर्य, प्रिय ५. सुन्दर प्रिय की लटें।

बातन[1] की गर मदद हो उसे यार कर रखूँ
अपने सुखन का उसको खरीदार कर रखूँ
उसकी अदा-ओ-नाज़ों ख़ूबी कूँ कर बयाँ
हर ख़ूबरु[2] कूँ सूरते-दीवार कर रखूँ
लायक़ है गर वो शौख़ कहे अपने फ़ख्र में
आवे अगर परी तो परस्तार[3] कर रखूँ
बरजा है गर चमन में कहे वो निगाह कर
नर्गिस कूँ अपनी चश्म का बीमार कर रखूँ
तस्बीह[4] तेरी ज़ुल्फ़ कूँ कहने में ऐ सनम
यक तार दे कि रिश्ता-ए-ज़ुन्नार[5] कर रखूँ
तेरे ख़याल आने की पाऊँ अगर ख़बर
सीने कूँ दाग़े-इश्क़ सूँ गुलज़ार कर रखूँ
ऐसे नसीब मेरे कहाँ हैं 'वली' कि आज
उस गुल बदन कूँ अपने गले हार कर रखूँ

यो सुन बात कूँ सेतीं गुल बदन
खुशी सूँ सुनो खोल अपना दहन
करे तूँ 'वली' सूँ अगर यक बचन
रक़ीबाँ के दिल में कटारी लगे

---

१. दिल २. सुन्दर प्रिय ३. पुजारी ४. माला ५. जनेऊ का रिश्ता, काफ़िरी।

दूर है लेकिन नज़क[1] दिस्ता है मुझ
दिल हुआ तुझ देखने को दूरबीं

रखता हूँ शमए-आह सजन के फ़िराक़[2] में
हाजत नहीं चिराग़ की मेरे रवाक़[3] में
आबे-हयाते-वस्ल सूँ सीने कूँ सर्द कर
जलता हूँ रात-दिन मैं पिया तुझ फ़िराक़ में
सुन कर ख़बर सबा सूँ गरेबाँ कूँ चाक कर
निकले हैं गुल चमन सूँ तिरे इश्तयाक़[4] में
ऐ दिल अक़ीक़े-लब[5] के ये आए हैं मिश्तरी[6]
मोती न बूझ ज़हरहे-जबीं[7] के बुलाक़[8] में
तेरे सुखन के नग़म-ए-रंगीं कूँ सुन 'वली'
डूबा अरक़[9] के बीच 'इराक़ी'[10] इराक़ में

तुझ इश्क़ की अगन सूँ सजन जल गया हूँ मैं
तेरी गली की ख़ाक में जा रल गया हूँ मैं
तुझ सोज़ में जला है जो दिल शम्मा की नमन
परवाना हो के उसके ऊपर बल गया हूँ मैं
ऐ आफ़ताब, देख तेरे मुख की रोशनी
बेताब होके मह की नमन गल गया हूँ मैं

१. नज़दीक २. जुदाई ३. छज्जा, गैलरी ४. शौक़, चाह ५. लाल होंठ ६. गाहक ७, ८. नाक की नथ के मोतियों की खबी ९. पसीना १०. ईराक-निवासी।

ये फिर के देखना तिरा मुझ दिल पे घात है
तेरी निगह के रम्ज़ कूँ अटकल किया हूँ मैं
तुझ दिल का देख सोज़ अधिक ऐ 'वली' मदाम
बोला पतङ्ग हाथ कूँ याँ मल गया हूँ मैं

छिपा हूँ मैं सदाए-बाँसली[1] में
कि ता जाऊँ परी-रु की गली में
न थी ताक़त मुझे आने की लेकिन
बज़ोरे-आह[2] पहुँचा तुझ गली में
अयाँ है[3] रंग की शोख़ी सूँ ऐ शोख़
बदन तेरा क़बाए-सन्दली[4] में
जो है तेरे दहन में रंगो-ख़ूबी
कहाँ ये रङ्ग यह ख़ूबी कली में
किया ज्यूँ लफ़्ज़ में मअ़नी[5] सरीजन
मुकाम अपना दिलो-जाने-'वली' में

शोला-ख़ू[6] जब सूँ नज़र आता नहीं
तब सूँ अंगारों पे लोटे है 'वली'

---

१. वंशी की आवाज़ २. आह के बल ३. स्पष्ट, प्रगट है ४. चन्दन से ठण्डे लबादे ५. अर्थ ६. शोले-सा चमकता सौन्दर्य ।

सहर-परवाज़[१] हैं पिया के नयन
होशे-दुश्मन हैं खुशअदा के नयन
ऐ दिल उसके आगे सम्हल के जा
तेग़े-बर कैफ़[२] हैं मीरज़ा[३] के नयन
दिल हुआ आज मुझ सूँ बेगाना
देख उस रम्ज़े-आशना[४] के नयन
जग में अपना नज़ीर[५] रखते नहीं
दिलबरी में वो दिलरुबा के नयन
नर्गिस्ताँ कूँ देखने मत जा
देख उस नर्गिसे-क़बा[६] के नयन
है वो गुलज़ारे-अबरु[७] का गुल
हक़ ने जिस को दिए हया के नयन
ऐ 'वली' किस आगे करूँ फरियाद
ज़ुल्म करते हैं बेवफ़ा के नयन

खुशकदाँ दिल कूँ बन्द करते हैं
नाम अपना बुलन्द करते हैं
अपने शीरीं-सुख़न[८] कूँ दे के खाज
सर्द बाज़ारे-क़न्द[९] करते हैं

१. सैहरा जैसे उड़ने वाले, चंचल २. तेग़ से तीखे ३. मुगल, यहाँ सुन्दर ४. प्रियतम का ढंग ५. समान ६. नर्गिस जैसी ७. भँवों रूपी बाग ८. मधुर वचन ९. सफ़ेद शकर।

जिस कूँ बेताब देखते हैं उसे
अपने ऊपर स्पन्द[1] करते हैं
बन्द करने कूँ आशिक़ाँ के सदा
ज़ुल्फ़ अपनी कमन्द[2] करते हैं
ऐ 'वली' जो कि हैं बुलन्द ख़याल
शेर मेरा पसन्द करते हैं

ख़ूबरु[3] ख़ूब काम करते हैं
यक निगह में ग़ुलाम करते हैं
देख ख़ूबाँ कूँ वक़्त मिलने के
किस अदा सूँ सलाम करते हैं
क्या वफ़ादार हैं कि मिलने में
दिल सूँ सब राम-राम करते हैं
कम निगाही सूँ देखते हैं वले
काम अपना तमाम करते हैं
खोलते हैं जब अपनी ज़ुल्फ़ाँ कूँ
सुबहे-आशिक़ कूँ शाम करते हैं
साहिबे-लफ़्ज़ उसकूँ कह सकिये
जिस सूँ ख़ूबाँ क़लाम करते हैं
दिल ले जाते हैं ऐ 'वली' मेरा
सर्व-क़द जब ख़राम[4] करते हैं

१. आतिशदान २. तीर, टेढ़ी, तिरछी ३. सुन्दर ४. नाज़ुक चाल, धीमी चाल।

गुले-मक़सद[१] के हार डाले हैं
नक़्दे-हस्ती[२] जो हार डाले हैं
क्यों न हो राहे-इश्क़ नश्तरे-ज़ार[३]
तेरी पलकाँ ने ख़ार डाले हैं
देख उसके नयन के खंजर कूँ
चश्मे-आहू[४] कूँ वार डाले हैं
क्यों के निकले बिरह के कूचे सूँ
ज़ुल्फ तेरी ने मार डाले हैं
ऐ 'वली' शहरे-हुस्न के एतराफ़
ख़त सूँ उसके हिसार[५] डाले हैं

जो पी के नाम पाक पे जी सूँ फ़िदा नहीं
राज़ी किसी तरह सती उस पर ख़ुदा नहीं
ऐ नूरे, जान-ओ-दीदा[६] तिरे इन्तज़ार में
मुद्दत हुई पलक सूँ पलक आशना नहीं
उश्शाक़ मुस्तहक़े-तरहम[७] हैं ऐ अज़ीज़
उनके ग़रीब हाल पे सख़्ती रवा नहीं
नर्शी अपस जबीं सूँ निकाल ऐ शकर-बचन
उश्शाक़ पर ग़ज़ब है ये नाज़ो-अदा नहीं

---

१. भाव रूपी फूल २. अपनी स्पष्ट हस्ती ३. नश्तर सा तेज़, काटने वाला ४. आँख की काली पुतली रूपी हिरण ५. घेरा ६. जान तथा आँख ७. दया का हक़दार।

ऐ नौबहारे-हुस्नो-गुल बागे-जानो-दिल
अफ़सोस है कि तुझ मने रंगे-वफ़ा नहीं
तर्के-लिबास बस कि किया हूँ जहाँ मनें
तेरी गली की ख़ाके-दरा[1] मुझ क़बा नहीं
डाले उखाड़ कोह[2] कूँ ज्यूँ काह[3] ऐ 'वली'
आशिक़ की आह सर्द कि जिसमें सदा नहीं

माशूक़ है बग़ल में 'वली' यह सुना हूँ मैं
मत दिल के बाज उसकूँ कहीं जुस्तजू[4] करो

है अगर ख़ातिरे - उश्शाक़ अज़ीज़
ग़ैर कूँ दरस दिखाया न करो
पाकबाज़ों में है मशहूर 'वली'
उस सूँ चेहरे को छुपाया न करो

शोख़ी-ओ-नाज़ सूँ उश्शाक़ कूँ हैराँ न करो
गर्दिशे-चश्म कूँ ग़ारतगर इमाँ न करो
लब तुम्हारे हैं शफ़ाबख़्श[5] 'वली' है बीमार
हैफ़-सद्हैफ़[6] कि इस वक़्त में दरमाँ न करो

१. दर की धूल २. पहाड़ ३. पहाड़ खोदने वाला, फरहाद
४. तलाश ५. स्वास्थ्यप्रद ६. अफ़सोस ।

ऐ दिल सदा उस शमा पर परवाना हो, परवाना हो
उस नौ बहारे-हुस्न का दीवाना हो, दीवाना हो
ऐ यार, गर मंजूर है तुझ आशनाई इश्क़ की
हर आशनाए-अक़्ल[१] सूँ बेगाना हो, बेगाना हो
मेरी तरफ़ साग़र-बकफ़[२] आता है वो मस्ते-हया
ऐ दिल, तकल्लुफ़ बरतरफ़[३] मस्ताना हो, मस्ताना हो
उस आशनाए-गौश सूँ होना है मुझ कूँ आशना
दरियाए-दिल में ऐ सुख़न, दुरवाना हो, दुरवाना[४] हो
मेरे सुख़न कूँ मेहर सूँ सुनता है वो रंगीं अदा
ऐ सरगुज़श्ते-हाले-दिल[५] अफ़साना हो, अफ़साना हो
चाहे कि शाहे-हुस्न कूँ लावे अपस के हुक्म में
टुक इश्क़ के मैदान में मरदाना हो, मरदाना हो
जारी रखेगा कब तलक रस्मे-जफ़ा ओ ज़ोर कूँ
ऐ मअनि-ए-हर जानो-दिल जानाना हो, जानाना[६] हो
मुझ कूँ ख़ुमारे-हिज्र[७] सूँ पैदा हुआ है दर्दे-सर
ए ग़र्दिशे-चश्मे-परी पैमाना हो, पैमाना हो
इस वक़्त पीतम की निगह करती है मशक़े-दिलबरी
यह आन ग़फ़लत की नहीं फरज़ाना[८], हो फरज़ाना हो

१. बुद्धिवादी २. लहराता ३. छोड़कर ४. दरवान, लहरा ५. मन पर बीते हाल ६. महबूब की भेंट ७. वियोग की मस्ती ८. अक्लमन्द ।

ऐ अक़्ल, कब लग वहम सूँ यक जा करेगी ख़ारो-ख़स[१]
आता है सैले-आशिक़ी वीराना हो, वीराना हो
आलम में तुझ कूँ ऐ 'वली' है फ़िक्रे-जमीयत[२] अगर
हर दम ख़याले-यार सूँ हमख़ाना हो, हमख़ाना हो

अजब कुछ लुत्फ़ रखता है शबे-ख़िलवत[३] में गुलरू सूँ
खिताब आहिस्ता-आहिस्ता, जवाब आहिस्ता-आहिस्ता

आज दिस्ता है हाल कुछ का कुछ
क्यों न गुज़रे ख़याल कुछ का कुछ
दिल ब-दिल कूँ आज करती है
शोख़ चंचल की चाल कुछ का कुछ
मुझ कूँ लगता है ऐ परी-पैकर[४]
आज तेरा जमाल कुछ का कुछ
असर बादाए-ख़्वानी[५] है
कर गया हूँ सवाल कुछ का कुछ
ऐ 'वली' दिल कूँ आज करती है
बूए - बाग़े - विसाल[६] कुछ का कुछ

ख़ूबाँ तुझ पे रश्क लजावें तो क्या अजब
जलता है आफ़ताब यो जाहो-जमाल[७] देख

---

१. खसखास के काँटे २. मिलन की चिन्ता ३. एकान्त रात ४. सुन्दर ५. शराब पीने का ६. मिलन ७. प्रकाश-स्थान ।

तेरे नयन का देख के मैखाना[१] आइना
है तुझ निगाहे-मस्त का दीवाना आइना
ऐ शमा, सर बुलन्द तिरा नूर देखकर
सब जौहराँ किये हैं सौ परवाना आइना
साफ़ी[२] अपस की ले के संवारा है शौक़ सूँ
रखने कूँ तुझ ख़याल का काशाना[३] आइना
जब सूँ पड़ा है अक्स तिरा आइने भितर
तब सूँ लिया है शक्ल परीखाना आइना
तुझ साफ़ मुख पे देख के यो ख़ते-जौहराँ[४]
ज़ंजीर पग में डाले है दीवाना आइना
तेरे नयन की देख के पुतली कूँ ऐ सनम
सर-ता-क़दम है सूरते-बुतख़ाना आइना
मानिन्द उस 'वली' के हुआ मस्तो-बेख़बर
तुझ नयन सूँ पिया है जो पैमाना आइना

हुआ है जब सूँ वो नूरे-नज़र अँखियाँ सूँ जुदा
नहीं नज़र में मिरी तब सूँ ग़ैरे-बेख़्वाबी
'वली' ख़याल में उस मह[५] जो कुई कि रखे
तू ख़वाब में न दिसे उसकूँ ग़ैरे-महताबी[६]

---

१. मधुशाला २. सौंदर्य ३. मकान, घर ४. जौहरी, पारखी ५. चाँद ६. चाँदनी बिना।

आया वो शोख़ बाँध के ख़ंजर कमर सती
आलम कूँ क़त्ले-आम किया यक नज़र सती
ताक़त रहे न बात की फिर इन्फ़हाल[1] सूँ
तशबीह[2] तुझ लबाँ कूँ अगर दूँ शकर सती
ग़म ने लिया है तब सूँ मुझे पेचो-ताब में
बाँधा है जब सूँ जीव कूँ उस मू-कमर सती
ग़म के चमन कूँ बादे-ख़िज़ाँ[3] का नहीं है ख़ौफ़
पहुँचा है उस कूँ आब मिरी चश्मे-तर सती
यक बार जाके देख 'वली' उस दरस के तईं
लिखता हूँ जिसके वस्फ़[4] कूँ आबे-गुहर[5] सती

उस सूँ रखता हूँ ख़याले-दोस्ती
जिसके चेहरे पर है ख़ाले-दोस्ती[6]
ख़ुश्क लब वो क्यों रहे आलम मने
जिस कूँ हासिल है जलाले-दोस्ती[7]
शमा-ए-बज़्म अहले-मआनी[8] क्यों न हुए
जिस ऊपर रोशन है हाले-दोस्ती
इस सुख़न सूँ आशना है दर्द मन्द
दर्द दूरी है व-बाले[9] -दोस्ती
ऐ सजन तुझ मुख की मसहफ़[10] में मुझे
देखना बरजा है फ़ाले-दोस्ती

१. शर्मिन्दगी २. उपमा ३. शिषिर-वात ४. प्रशंसा ५. मोतियों के पानी, चमक से ६. दोस्ती का नक्श ७. दोस्ती का जलाल, प्रकाश, हक ८. दुनियावी अर्थ ९. झंझट १०. किताब ।

फ़ैज़ सूँ तुझ क़द के ऐ रंगी बहार
ताज़ा - ओ - तर है निहाले - दोस्ती
ऐ 'वली' हर आन कर मशक़े-वफ़ा[१]
है वफ़ादारी कमाले-दोस्ती

जू कुई हर रंग में अपने कूँ शामिल कर नहीं गिनते
हमन सब आकिलाँ[२] में उसकूँ आकिल कर नहीं गिनते
मदरस-मदरसे[३] में गर न दबोले दरस दर्शन का
तो उसकूँ आशक़ाँ उस्ताद क़ामिल कर नहीं गिनते
ख़याले-ख़ाम कूँ जु कुई कि धोवे सफ़-ए-दिल सूँ
तासुफ़[४] के मुतालिब[५] कूँ वो मुश्किल कर नहीं गिनते
जो बिस्मिल[६] नहिं हुआ तेरी नयन के तेग़ सूँ बिस्मिल
शहीदाँ जग के उस बिस्मिल कूँ बिस्मिल कर नहीं गिनते
परत[७] के पन्थ में जु कुई सफर करते हैं रात होर दिन
वो दुनिया कूँ बग़ैर अज़ जाहे-बाबल कर[८] नहीं गिनते
नहीं जिस दिल में पी की याद की गर्मी की बेताबी
तो वैसे दिल कूँ सारे दिलबराँ दिल कर नहीं गिनते
रहे महरुम तेरी ज़ुल्फ़ के महरे सूँ वो दायम
जु कुई तेरी नयन कूँ ज़हरे-क़ातिल कर नहीं गिनते

---

१. वफ़ा का अभ्यास २. अक्लमन्द ३. मास्टर स्कूल में ४. ज्ञान-ध्यान ५. इच्छुक ६. दुःखी ७. प्रीत ८. एक पुराना नगर।

न पावे वो दुनिया में लज़्ज़ते-दीवानगी हर्गिज़
जो तुझ ज़ुल्फ़ाँ के हल्के कूँ सलासल[1] कर नहीं गिनते
बग़ैर अज़ मारफ़त[2] सब बात में गर कुई अछे कामिल[3]
'वली' सब अहले-अ़रफ़ाँ[4] उसकूँ कामिल कर नहीं गिनते

'वली' राहे-मुहब्बत में वफ़ादारी मुक़द्दम[5] है
वफ़ा नहिं जिसमें उसकूँ अहले-ईमा कर नहीं गिनते

सजन ! तुझ बिन हमन गुलशन कूँ गुलशन कर नहीं गिनते
बजज़ तेरे महे-रोशन[6] कूँ रोशन कर नहीं गिनते
सिकन्दर क्यों न जावे बहरे-हैरत में कि मुश्ताक़ाँ[7]
तुम्हारे मुख अगे दरपन कूँ दरपन कर नहीं गिनते
नहीं तेरे रक़ीबाँ सूँ अ़दावत दिल में हमना के
मुरव्वते-दोस्ताँ दुश्मन कूँ दुश्मन कर नहीं गिनते
अगर अंझुवाँ के गौहर सूँ मकमल नहीं हुआ दामन
मुहब्बते-मशरब[8] उस दामन कूँ दामन कर नहीं गिनते
'वली' दिल में हमारे हासदाँ[9] का ख़ौफ़ नहीं हर्गिज़
बजज़ वज़वे[10] किसी रहज़न कूँ रहज़न[11] कर नहीं गिनते

---

१. सिलसिलेवार २. सूफ़ीवाद की अन्तिम मिलन अवस्था ३. योग्य ४. पहचानने वाले ५. मक़सद, आवश्यक ६. प्रकाशित, उदित चाँद ७. इच्छुक ८. मुहब्बत करने वाले ९. जलने वाले १०. एक प्रकार का चोर, यहाँ माशूक ११. चोर, लुटेरा।

यह मिरा रोना कि तेरी है हँसी
आप-बस नहीं, पर बसी है पर बसी
है कुल आलम में करम मेरे ऊपर
जज़रसी[1] है जज़रसी है जज़रसी
रात-दिन जग में रफ़ीके-बेकसाँ[2]
बेकसी है बेकसी है बेकसी
सुस्त होना इश्क़ में तेरे सनम!
नाकसी है नाकसी है नाकसी[3]
बायसे रुस्वाई-ए-आलम[4] 'वली'
मुफ़लसी है मुफ़लसी है मुफ़लसी

क्यों न आवे नशा-ए-ग़म सूँ दिमाग़े-आशिक़ी
बादा-ए-हैरत[5] सूँ है लबरेज़ अयाग़े-आशिक़ी[6]
अश्क़ खूँ-आलूद[7] हैं सामाने-तख़राए-नियाज़[8]
मेहर फ़रमाने-वफ़ादारी है दाग़े-आशिक़ी
आब सूँ दरिया के हर्गिज़ काम नहिं उश्शाक़ कूँ
गर ये हसरत सूँ है सरसब्ज़ बाग़े-आशिक़ी
गर तलब है तुझ कूँ राज़ख़ाना-ए-दिल[9] हो अयाँ
आह की आतिश सूँ रोशन कर चिराग़े-आशिक़ी
दर्दमंदाँ बाग़ में हर्गिज़ न जावें ऐ 'वली'
गर न देवे नाला-ए-बुलबुल[10] सुराग़े-आशिक़ी

---

१. घटा-सी २. लाचार साथी ३. घटियापन, छोटापन ४. संसार की रुस्वाई (शिकायत) का कारण ५. आश्चर्य की शराब ६. आशिकी का प्याला ७. खून से भरे ८. बादल का तोफ़ा ९. दिल का भेद १०. बुलबुल का रोना।

तुझ मुख की आब[1] देख गई आब आब[2] की
यह ताब देख अक़्ल गई आफ़ताब की
तुझ हुस्न के दरिया का सुना जोश जब सती
पुरनम हैं अश्त्याक़[3] सूँ अँखियाँ हुबाब[4] की
जग तुझ लबाँ के देख तबसम कूँ सुध सटा
ज़ंजीर पाए-अक़्ल है मौज उस शराब की
देखा हूँ जब सूँ ख़्वाब में वो चश्मे-नीम ख़्वाब[5]
सूरत ख़यालो-ख़्वाब[6] हुई मुझ कूँ ख़्वाब की
मेरे सुख़न में फ़िक्र सूँ कर ऐ 'वली' निगाह
हर बैत मुझ ग़ज़ल मने है इन्तख़ाब[7] की

जिसकूँ लज़्ज़त है सजन के दीद की
उसकूँ ख़ुश वक़्ती है रोज़े-ईद की
दिल मिरा मोती हो तुझ बाली में जा
कान में कहता है बाताँ भेद की
ज़ुल्फ़ नहिं तुझ मुख पर ऐ दरियाए-हुस्न
मौज है यह चश्मा-ए-ख़ुर्शीद की
उसके ख़ते-ख़ाल सूँ पूछो ख़बर
बूझता हिन्दू है बाताँ बेद की
तुझ दहन कूँ देखकर बोला 'वली'
ये कली है गुलशने-उम्मीद की

---

१. चमक, सुन्दरता २. पानी, सुन्दरता ३. शौक ४. बुलबुला ५. अधजगी आँखें ६. स्वप्नवत् ७. चुना हुआ।

देख दस्तारे-बसन्ती साक़ी-ए-सरशार[१] की
खुल गई हैं आज अँखियाँ नर्गिसे-बीमार की
बात रह जायेगी क़ासिद[२] वक़्त रहने का नहीं
दिल तड़पता है शताबी ला ख़बर दिलदार की
बात कहने का कभी जो वक़्त पाता है ग़रीब
भूल जाता है वो सब कुछ देख सूरत यार की
मुहरके[३] में इश्क़ के हर बु-अल्हवस[४] का काम क्या
देख हालत क्या हुई मंसूर सूँ सरदार की
ऐ 'वली' उस बेवफ़ा की मेहरबानी पर न भूल
दिल का दुश्मन है मगर करता है बातें प्यार की

परेशाँ आशक़ाँ के दिल फ़िदा है तुझ सितमगर के
बला गरदाँ हैं ज्यूँ जौहर नमन तुझ तेग़ो-ख़ंजर के
दिया है हक़ ने इस दुनिया में जन्नत के क़सर[५] उनको
बजानो-दिल जु कुई मुश्ताक़ हैं तुझ हूरे-पैकर के
तिरे इस हुस्न आलमगीर कूँ खैंचे अपस बर में
मगर रखती है क्या ये आरसी तालह[६] सिकन्दर के
अगर चाहूँ लिखूँ तुझ लाल के औसाफ़े-रंगी[७] कूँ
रगे-याक़ूत से अव्वल बनाऊँ तारे-मस्तर[८] के
'वली' तेरे सुख़न याक़ूत सूँ रंगीं हुए लेकिन
ख़रीदाराँ जहाँ भीतर कहाँ हैं आज गौहर के

१. प्रसन्न साक़ी की बासन्ती पोशाक २. पत्रवाहक, सन्देशवाहक
३. हरकत देने वाले ४. अधिक हवस वाला ५. कमी ६. आज्ञाकारी
७. रंगीन प्रशंसा ८. तार ठीक करने का यन्त्र ।

Library Sri Pratap ... Srinagar

उसकूँ हासिल क्यूँ के होवे जग में फ़रागे-ज़िन्दगी[1]
गर्दिशे-अफ़लाक[2] है जिसकूँ अयागे-ज़िन्दगी[3]
ऐ अज़ीजाँ ! सैरे-गुलशन है गुले-दागे-अलम[4]
सोहबते-अहजाब[5] है मअ़नी में बाग़े-ज़िन्दगी
लब हैं तेरे फ़ी-अलहक़ीकत चश्म-ए-आबे हयात
ख़िज्रे-ख़त ने उस सूँ पाया है सुराग़े-ज़िन्दगी
जब सूँ देखा नहिं नज़र भर काकले-मुशकीने-यार[6]
तब सूँ ज्यूँ सम्बल[7] परेशाँ है दिमाग़े-ज़िन्दगी
आस्माँ मेरी नज़र में कल्ब-ए-तारीक[8] है
गर न देखूँ तुझकूँ ऐ चश्मो-चिराग़े-ज़िन्दगी
लाला-ए-ख़ूनीं कफ़न के हाल सूँ ज़ाहिर हुआ
बस्तगी[9] है खाल सूँ ख़ूबाँ के दाग़े-ज़िन्दगी
क्यों न होवे ऐ 'वली' रोशन शबे-कद्रे-हयात
है निगाहे-गर्म गुल-रोयाँ[10] चिराग़े-ज़िन्दगी

गुनाहाँ के सिया-नामे सूँ क्या ग़म उस परेशाँ कूँ
जिसे ये ज़ुल्फ़ दस्त-आवेज़[11] है रोज़े-क़यामत में

कश्ती पर मुझ नयन की अँझवाँ के क़ाफ़िले चढ़
मक़सूद के हरम कूँ अहराम बँध चले हैं

१. जीवन की फराग़दिली २. अभाग ३. जीवन का प्याला ४. दाग़दार, दाग़ का आलम ५. पर्दे का साथ ६. यार की सुगन्धित घुँघराली लटें ७. एक घास ८. अन्धेरे का जिस्म ९. बँधा हुआ १०. फूल से रोम वाले, सुन्दर ११. हाथ में।

Acc. Number ....
Class No.

गया है खौफ़ सूँ उड़ लाल का रंग
तिरे याक़ूते-लब[१] की देख लाली

जिसे इश्क़ का तीर कारी लगे
उसे ज़िन्दगी क्यों न भारी लगे
न छोड़े मुहब्बत दमे-मर्ग[२] लग
जिसे यार जानी सूँ यारी लगे
न होवे उसे जग में हर्गिज़ क़रार
जिसे इश्क़ की बेक़रारी लगे
हर इक वक़्त मुझ आशिक़े-पाक कूँ
प्यारे तेरी बात प्यारी लगे
'वली' कूँ कहे तू अगर यक वचन
रक़ीबाँ के दिल में क़ठारी लगे

आज़ुर्दगी[३] सूँ उसकी मत ख़ौफ़ कर 'वली' तू
है ऐन मेहरबानी उस मेहरबाँ की गाली

---

१. [redacted] जीवन, मृत्युपर्यन्त ३. कष्ट, रंज।

तारीफ़ उस परी की जिसे तुम सुनाओगे
ता-हश्र[1] उसके होश कूँ उसमें न पाओगे
जिस वक्त सर करोगे बयाँ उसकी ज़ुल्फ़ का
सौदाज़दों[2] पे ग़म का सिया-रोज़[3] लाओगे
जिस वक़्त उसके हुस्न कूँ देखोगे बेहिजाब[4]
हैराँ हूँ क्यों के जामे में अपने समाओगे
तौबा तरफ न देखोगे हर्गिज़ निगाह कर
गर उसके क़द सूँ जीव को अपने लगाओगे
दोगे अगर 'वली' कूँ ख़बर उसके लुत्फ़ की
आतिश नमन रक़ीब का सीना जलाओगे

करती है दिल कूँ बेख़ुद उस दिलरुबा की गाली
गोया है जामे-हैरत[5] उस खुश अदा की गाली
किस नाज़ो-किस अदा सूँ आता है ऐ अज़ीज़ाँ
है मीरज़ा[6] अदा में उस मीरज़ा की गाली
मुद्दत के बाद गर्मी दिल की फ़रद[7] हुई है
शर्बत है हक़ में मेरे उस बेवफ़ा की गाली
गुलज़ार सूँ वफ़ा के क्यूँ जा सकूँ मैं बाहिर
करती है बन्द दिल कूँ गुलगूँ कबा की गाली
ज्यूँ गुल शिगफ़्तगी[8] सूँ जामे में नहिं समाता
जब सूँ सुना 'वली' ने रंगीं अदा की गाली

१. आजीवन २. ग़मग़ीनों पर ३. काले दिन, दुर्दिन ४. बेपर्दा ५. मस्ती का प्याला ६. मुगलों जैसी रोबीली अदा ७. समाप्त ८. खिलने पर।

Collection Srinagar.

तिरे होटाँ की लाली सूँ मुहाली
छिपी हाथों में जा मेहँदी की लाली
तिरा क़द देख तुझ पाओं पे झुक-झुक
पड़े शमशाद की डाली पे डाली
बयाँ तुझ ज़ुल्फ़ की स्याही का कहूँ क्या
कि नहीं है मशल उसके रात काली
तिरी शमशीरे-अबरू देख ज़ालिम
लिया शेरों ने जा कोहों[1] की जाली
खुमारी देख तुझ अँखियों की बे-कैफ़[2]
हुई टुकड़े शराबे-पुर्तगाली
तिरे मुख का दीवाना हो चमन में
गया है भूल चम्पा फूल माली
'वली' पाओं सीं उसके कुछ अजब नहिं
अगर्चे कर उठे शब नक़्शे-क़ाली

तिरे मुख के गुलिस्ताँ की अगर हूराँ में शोहरत हो
तो हर इक मस्त होकर छोड़ गुलज़ारे-अरम निकले

आग़ोश में आने की कहाँ ताब है उसकूँ
करती है निगह जिस क़दे-नाज़ुक पे ग़िरानी

१. पहाड़ों २. लाजवाब मस्ती ।

अगर गुलशन[1] तरफ वो नौ-ख़ते-रंगीं अदा[2] निकले
गुलो-रीहाँ[3] सूँ रंगो-बू शिताबी पेशवा निकले
खिले हर गुँच-ए-दिल ज्यूँ गुले-शादाब-शादी[4] सूँ
अगर टुक घर सूँ बाहिर वो बहारे-दिलकशा[5] निकले
ग़नीमे-ग़म[6] किया है फौज बन्दी इश्क़बाज़ाँ पर
बजा है आज वो राजा अगर नौबत बजा निकले
निसार उसके क़दम ऊपर करूँ अंझुवाँ के गौहर सब
अगर करने कूँ दिलजोई वो सर्वे-खुश अदा निकले
सनम आए करूँगा नाला-ए-जाँसोज़[7] कूँ ज़ाहिर
मगर उस संगे-दिल सूँ मेहरबानी की सदा निकले
रहे मानिन्द लाले-बेबहाँ शाहाँ के ताज ऊपर
मुहब्बत में जू कुई असबाबे-ज़ाहिर कूँ बहा निकले
बख़ीली[8] दरस की हर्गिज़ न कीजो ऐ परी-पैकर
'वली' तेरी गली में जब कि मानिन्दे-गदा निकले

---

१. बगीचा २. काले तिल तथा सुन्दर हाव-भाव वाला ३. रीह के फूलों से ४. प्रसन्नता से प्रसन्न ५. बहार-सा दिलकश ६. ग़मगीन ७. जानलेवा आँसू, रोना ८. कंजूसी।

छोड़ ऐ शौख़ तर्ज़े-ख़ुद कामी[1]
मत हो हर दीदा-ए-बाज़ का दामी[2]
ऐ 'वली' ग़ैर इश्क़ हरफ़ दीगर
पुख़्ता मग़ज़ाँ[3] के नज़द है ख़ामी

तिरी अँखियाँ कूँ देखे दिल है आहुए-बियाबानी[4]
तिरी ज़ुल्फाँ सूँ जी है बस्त-ए-दामे परेशानी[5]
हुआ है दिल हर इक आशिक़ का नालाँ मशल बुलबुल के
तिरे मुख ने किया है जब सूँ जग भीतर गुलिस्तानी
हुआ याक़ूत रंगीं देख तेरे लाले-रंगीं कूँ
हुआ सर-सब्ज़ जो तुझ ख़त में देखा रंगे-रीहानी[6]
सजन तेरी ग़ुलामी में किया हूँ सल्तनत हासिल
मुझे तेरी गली की ख़ाक है तख़्ते-सुलेमानी
'वली' कूँ गर तिरे नज़दीक कुई देखे तो यूँ बूझे
लगी है सफ़-ए-हस्ती ऊपर तस्वीरे-हैरानी

ऐ पतंग जलके तुझ मुए पीछे
शमा साबित क़दम है जलने में

१. अभिव्यक्ति का ढंग २. देखने वाले के बंधन में ३. परिपक्व बुद्धि वाले ४. बियाबान-सा अँधेरा, सूना, भयावह ५. परेशानी का बन्धन ६. फूलों का रंग ।

तिरा लब देख हैवाँ[1] याद आवे
तिरा मुख देख कुन्हाँ[2] याद आवे
तिरे दो नयन देखूँ जब नज़र भर
मुझे तब नर्गिस्ताँ याद आवे
तिरी ज़ुल्फ़ाँ की तूलानी[3] कूँ देखे
मुझे लैले-ज़मस्ताँ[4] याद आवे
तिरे खत का ज़मर्दे-रंग[5] देखे
बहारे-सम्बुलिस्ताँ[6] याद आवे
तिरे मुख के चमन के देखने कूँ
मुझे फिरदौसे-रिज़वाँ[7] याद आवे
तिरी ज़ुल्फ़ाँ में यो मुख जो कि देखे
उसे शमा-ए-शबिस्ताँ याद आवे
जु कुई देखे मिरी अँखियाँ कूँ रोते
उसे अब्रे-बहाराँ[8] याद आवे
जो मेरे हाल की गर्दिश कूँ देखे
उसे गर्दाबे-गरदाँ[9] याद आवे
'वली' मेरा जुनूँ जो कुई कि देखे
उसे कोहो-बियाबाँ[10] याद आवे

---

१. ऊँट, यहाँ पतले सुर्ख होंठ २. माहीयत, चाँदनी ३. लम्बाई ४. काला सुर्मा ५. तिल का चमकता काला रंग ६. एक बेल ७. स्वर्ग के बगीचे ८. वर्षा ऋतु ९. भिखारियों की बुरी दशा १०. सूने पहाड़।

उस वक़्त मिरे जीव का मक़सूद बर आवे
जिस वक़्त मेरे बर-मनें वो सीमबर[1] आवे
अँखियाँ की करूँ मसनद ओ पुतली का करूँ बालिश[2]
वो नूरे-नज़र आज अगर मेरे घर आवे
उस वक़्त मिरे बख़्त की ज़ाहिर हो बुलन्दी
जिस वक़्त वो खुश-कामते-आली[3] नज़र आवे
जामे मनें गुँचे नमन रह न सकूँ मैं
गर पी की ख़बर लेके नसीमे-सहर[4] आवे
गर उस महे-दिलजू[5] का गुज़र मेरी तरफ हो
दिल के शजरे-ख़ुश्क[6] कूँ फिर बर्गो-बर[7] आवे
उस वक़्त मुझे दावा-ए-तस्ख़ीर[8] बजा है
जिस वक़्त मेरे हुक्म में वो अश्व गर[9] आवे
तुझ चश्म सिया-मस्त के देखे सती ज़ाहिद
तुझ ज़ुल्फ के कूचे मनें ईमाँ बिसर आवे
तुझ लब की अगर याद में तस्नीफ़[10] करूँ शेर
हर शेर मनें लज़्ज़ते-शहदो-शकर आवे
जिस आन 'वली' वसफ़[11] करूँ पी के वतन का
हर शेर मेरा ग़ैरते सिल्के-गुहर[12] आवे

---

१. चाँदी-सा चमकता, सुन्दर २. तकिया ३. महान् खुशी देने वाला ४. प्रात-समीरण ५. चाँद से सुन्दर प्रिय ६. सूखा मुँह ७. बिजली की चमक ८. बेग़ार का दावा ९. नाज़ुक भाव वाला १०. रचूँ ११. प्रशंसा १२. सुनहला मोती ।

सरूरे-ऐश[1] गावें हम अगर वो इश्व साज़[2] आवे
बजा दें तब्ले-शादी के अगर वो दिल नवाज़ आवे
ख़ुमारे-हिज्र ने जिसके दिया है दर्दे-सर मुझ कूँ
रखूँ नश्शा नमन अँखियाँ में गर वो मस्ते-नाज़ आवे
जनूने-इश्क़[3] में मुझ कूँ नहीं ज़ंजीर की हाजत
अगर मेरी ख़बर लेने कूँ वो ज़ुल्फ़े-दराज़[4] आवे
अदब के अहतमाम[5] आगे न पावे बारहाँ[6] हर्गिज़
तिरे साए की पा-बोसी[7] कूँ गर रंगे-अयाज़[8] आवे
अज़ब नहिं गर गुलाँ दौड़ें पकड़ कर सूरते-क़मरी[9]
अदा सूँ जब चमन भीतर वो सर्वे-सरफराज़[10] आवे
पुरस्तश उसकी मेरे सर पे होवे सर सती लाज़िम
सनम मेरा रक़ीबाँ के अगर मिलने सूँ बाज़ आवे
'वली' उस गौहरे-काने-हया[11] की क्या कहूँ ख़ूबी
मेरे घर इस तरह आता है ज्यूँ सीने में राज़ आवे

दरिया सती निस्बत है बजा तबीह को मेरी
इस मर्तबा अम्वाजे-सुख़न की है रवानी

---

१. मस्ती में २. नाज़ुक हाव-भाव वाला ३. प्रेम का उन्माद ४. लम्बी लटों वाला ५. कोशिश ६. अनेक बार ७. पाँवों चूमने ८. खुश-रंग ९. चाँद की सूरत, कमर पकड़कर १०. सर्व से भी बढ़कर लम्बा-ऊँचा, सुन्दर ११. मोतियों की खान को शर्माने वाला, सुन्दर प्रिय ।

फ़लातूँ हूँ ज़माने का सजन जब मुझ गली आवे
न बूझूँ तिफ़्ले-मक्तब[1] कर अगर वाँ बूअली[2] आवे
सरूरे-इश्क़ मुझ दिल में लबालब है अजब मत कर
अगर मुझ आह की नै[3] सूँ सदाए-बाँसली[4] आवे
तमाशा देखने तेरे दहन का ऐ गुलिस्ताँ-रु
गरेबाँ चाक होकर हर चमन सूँ हर कली आवे
करूँ क्या ऐ सजन, तुझ पर मिरा अफ़सूँ[5] नहीं चलता
वगरना इक इशारत में परी मुझ घर चली आवे
ग़रूरे-हुस्न ने तुझकूँ किया है इस क़दर सरकश
कि ख़ातिर में न लावे तू अगर तुझ घर 'वली' आवे

यक बार गर चमन में वो नौ-बहार जावे
बुलबुल के दिल सूँ गुल का सब ऐतबार जावे
आवे अगर करम सूँ मानिन्द अब्रे-रहमत[6]
देखे सूँ आब उसकी दिल का ग़ुबार जावे
चंचल की बात लावे तूती अगर ज़बाँ पर
अलबत्ता आरसी के दिल सूँ ग़ुबार जावे
जाती है हासदाँ के यूँ दिल में बेत मेरो
सीने में दुश्मनों के ज्यूँ ज़ु-अलफ़क़ार[7] जावे
मस्ती ने तुझ नयन की बेख़ुद किया 'वली' कूँ
आवे जो बज़्मे-मै[8] में क्यूँ होशियार जावे

१. स्कूली बालक २. ख़ुदा की झनक ३. अलामत ४. बाँसुरी की आवाज़ ५. बस ६. दया के बादल ७. प्रकाश ८. शराब पीने का स्थान, मधुशाला।

अगर वो रश्के-गुलज़ारे-अरम[1] गुलशन तरफ़ जावे
अजब नहिं बाग़ में माली किये पर अपने पछतावे
कहाँ है ताब मानी कूँ कहाँ बहज़ाद[2] कूँ ताक़त
कि तेरी नाज़ की तस्वीर तुझ कूँ लिख के दिखलावे
कहाँ है आज यारब जल्व-ए-मस्ताना-ए-साक़ी[3]
कि दिल सूँ ताब, जी सूँ सब्र, सर सूँ होश ले जावे
किया है जिसकी ज़ुल्फ़ाँ ने हमारे दिल कूँ सरगरदाँ[4]
नहीं कुइ उस हटीले कूँ हमारी बात समझावे
करे हर ज़ुल्फ़ कूँ ज़ंजीर कर कर शाना-आवेज़ी[5]
अगर इन्साफ़ कूँ वो नाज़नी टुक काम फ़रमावे
'वली' अरबावे-मअनी[6] में उसे है अर्श का रुतबा
परी ज़ादे-मुआनी कूँ जू कुइ कुर्सी प बिठलावे

है हुस्न तिरा हमेशा यकसाँ
जन्नत सूँ बहार क्यों कि जावे
मुमकिन नहीं अब 'वली' का जाना
है आशिक़े-जार क्यों कि जावे

---

१. स्वर्ग का फूल, बहुत सुन्दर २. ढूण्ढने वाला ३. साकी की मस्ती के दृश्य ४. परेशान ५. कन्धे पर ६. ईश्वर की दृष्टि में।

चमन में जल्वागर जब वो गुले-रंगी-अदा होवे
ख़ज़ाने - ख़ातिरे-आशिक़ बहारे - मुद्दआ होवे
हुआ हूँ ज़र्दो-लाग़र[१] काह[२] की मानिन्द तुझ ग़म में
बजा है गर कशिश तेरी भवाँ की कहरबा[३] होवे
बरंगे-गर्दो-बाद उसकूँ करे आलम में सरकरदाँ
जिसे इश्क़े - बला अंगेजे - ख़ूबाँ रहनुमा होवे
न छोड़ें रास्ती रोशन दिलाँ सुबहे-क़यामत तक
अगर ज्यूँ शमा हर-हर आन तनसूँ सरजुदा होवे
अपस के काबा-ए-मक्सद[४] कूँ बे सही सफर पहुँचूँ
ख़याल उसका अगर कश्ती में दिल की नाख़ुदा[५] होवे
चमन में दिल के जब गुज़रे ख़याल उस सर्व क़ामत का
सरापा आह सर्दे - सीना सर्दे - खुश अदा होवे
पढ़े गर फ़ातिहा[६] ज़ालिम लबे-जाँबख़्श सूँ अपने
शहादत गाह-ए-आशिक़ चश्म-ए-आबे-बका होवे
न होवे यक सुबह नाने-गर्म सूरज सूँ उसे सैरी
तुम्हारे दरस की नहमत[७] की जिसकूँ इश्तहा[८] होवे
जुदा उस गौहरे-यकता सूँ होना सख़्त मुश्किल है
अगर यक आन हम दरिया दिलाँ सूँ आशना होवे
'वली' मुश्किल नहीं हर्गिज़ पहुँचना आबे-हैवाँ कूँ
अगर खिज़्रे खते-ख़ूबाँ हमारा रहनुमा होवे

---

१. दुबला २. तिनका ३. उत्पीड़क ४. मंज़िले-मक्सूद ५. नाविक ६. मौत के बाद शान्ति-गीत ७. खुदाई देन, कृपा ८. भूख, इच्छा।

शबनम में ग़र्क होवे शर्मिन्दगी सूँ हर गुल
वो गुल बदन चमन में जब बेहिजाब[1] होवे

अगर मोहन करम सूँ मुझ तरफ आवे तो क्या होवे
अदा सूँ उस कदे-नाज़ुक कूँ दिखलावे तो क्या होवे
मुझे उस शोख़ के मिलने का दायम शौक़ है दिल में
अगर यक बार मुझ सूँ आके मिल जाये तो क्या होवे
रकीबाँ के न मिलने में निहायत उसकी ख़ूबी है
अगर दानिश[2] कूँ अपनी काम फ़रमाए तो क्या होवे
पिया के क़न्दे-लब ऊपर किया है हठ मिरे दिल ने
मुहब्बत सूँ अगर टुक उसकूँ समझावे तो क्या होवे
'वली' कहता हूँ उस मोहन सूँ हर इक बात पर्दे में
अगर मेरे सुख़न के मग्ज़ कूँ पाए तो क्या होवे

क्यों कर रहे अज़ीज़ाँ तारीकि-ए-शबे-ग़म[3]
वो रश्के-माहे-अनवर[4] जब बेहिजाब होवे
हर-हर निगह सूँ अपनी बेख़ुद करे 'वली' कूँ
वो चश्मे-मस्त सर ख़ुश जब नीम ख़्वाब होवे

१. बेपर्दा २. अक़्ल ३. ग़म की काली रात ४. प्रकाशवान चाँद भी जिससे ईर्षा करता है।

मारा है इन्तज़ार ने मुझ कूँ वले हनूज़
उस बेवफ़ा कूँ दिल की हक़ीक़त नहीं लिखी
डरता हूँ सादगी सती मोहन की ऐ 'वली'
इस खौफ़ सूँ रक़ीब की ग़लीयत[१] नहीं लिखी

अगर मुझ कन तू ऐ रश्के-चमन[२] होवे तो क्या होवे
निगह मेरी का तेरा मुख चमन होवे तो क्या होवे
सिया-रोज़ाँ[३] के मातम की सियाही दफ़ा करने कूँ
अगर यक निस तू शमा-ए-अंजुमन[४] होवे तो क्या होवे
तिरी बातों के सुनने का हमेशा शौक़ है दिल में
अगर यक दम तू मुझ सूँ हम सुखन[५] होवे तो क्या होवे
मुआ जो शौक़ में तुझ देखने के ऐ हिलाल-अबरू[६]
उसे अँखियाँ के पर्दे का कफ़न होवे तो क्या होवे
'वली' गुँचा नमन इक रात उस हस्ती के गुलशन में
अगर मुझ बर में वो गुल पैरहन होवे तो क्या होवे

क्यों बेखुदी न आवे उस वक़्त पर 'वली' कूँ
वो सर्व-नाज़-पैकर जब नीम ख्वाब होवे

---

१. शिकायत, बुराई २. बाग भी जिस पर ईर्षा करे, विकसित ३. काले दिन, बुरे दिन ४. महफ़िल की शोभा ५. बातचीत करना ६. दूज के चाँद-सी टेढ़ी भँवें।

वो मुहब्बत में तिरी फ़ानी[1] हुए
रोज़ो-शब जो महवे-हैरानी[2] हुए
देख तुझ अबरू की जौहरदार तेग़
जौहराँ तलवार के पानी हुए
तुझ नयन के खंजराँ पर कर नज़र
दीदाबाजाँ-चश्म[3] कुर्बानी हुए
ऐ सजन तेरी परत[4] के दोस्त के
दोस्ताँ कई दुश्मने-जानी हुए
जब सूँ तू खाया है पान ऐ आफ़ताब[5]
तेरे लाले-लब बदख़्शानी[6] हुए
तुझ दहन कल-अदम की याद सूँ
बाट में उश्शाक कई फ़ानी हुए
तुझ दसन[7] की देख ख़ूबी गौहराँ
ग़र्के - दरियाए - पशेमानी[8] हुए
तुझ कूँ जो देखे यहाँ ऐ सुबहरू
ज्यूँ सुरज, दिल उनके नूरानी[9] हुए
इश्क़ में उस रश्के-लैला के 'वली'
मशल मजनूँ के बियाबानी[10] हुए

१. तबाह २. दीवाने ३. देखने वालों की आँख ४. प्रीति ५. सूर्य ६. बदख़शाँ के निवासियों जैसे कोमल, सुर्ख ७. अनुपस्थिति ८. लज्जित होना, डूब मरना ९. प्रकाशवान १०. जंगलवासी ।

क्या हुआ गर अक्ल दूरन्देश की सुनता हूँ बात
होश सूँ खोवेगा आखिर वो लबे-मै गूँ[1] मुझे

क्यों न हासिल हो रमे-आहू[2] मुझे
उसकी अँखियाँ ने किया जादू मुझे
रात आने कहके फिर आया नहीं
पेच देता है वो मुश्कीं-मू[3] मुझे
ऐ अज़ीज़ाँ क्या करूँ इख़लास[4] की
पहुँचती नहीं गुल बदन सूँ बू मुझे
क्योंकि बैठूँ गोशा-ए-आराम[5] में
खैंचता है वो कमाँ-अबरू मुझे
बुलबुले-नालाँ[6] हुआ हूँ दर्द सूँ
जब नज़र आया है वो गुलरू मुझे
शोख़ी-ए-चश्मे - परी का ढंग हूँ
हैरते-अफ़ज़ा[7] है रमे-आहू मुझे
ज़हन में वस्ता है वो खुर्शीदरू
गर्मिए-ग़म सूँ हुई है खू[8] मुझे
ऐ 'वली' है जग में महराबे-दुआ[9]
किब्ला-रू का हर ख़मे-अबरू मुझे

---

१. शराबी होंठ २. भागता हिरन, यहाँ अस्थिरता, चंचलता ३. सुगन्धित केशों वाला ४. दोस्ती, हमदर्दी ५. आरामदायक बग़ल, कोना ६. बुलबुल के समान रोने वाला ७. आश्चर्यदायक ८. लगाव, आदत ९. दुआ की आह।

क्यों न होवे आह मेरी हमसरे सर्वे-बुलन्द[1]
याद आता है अज़ीज़ाँ वो क़दे-मोज़ूँ[2] मुझे

तुझ निगाहे-मस्त सूँ हासिल है मदहोशी मुझे
तुझ लबे-ख़ामोश ने बख़्शी है ख़ामोशी मुझे
ग़ैर सूँ खाली किया हूँ दिल कूँ अपने ज्यूँ हिजाब[3]
तुझ निगह ने जब सूँ बख़्शी खाना बर दोषी मुझे
जाम में रोशन है जम[4] की सल्तनत का सब हिसाब
ऐश सुल्तानी का है फ़ैज़े-कदा-नोशी[5] मुझे
तुझ कमर की ताब पर ताक़त रबाई ख़त्म है
इस नज़ाकत ने दिया मेले-हम-आग़ोशी[6] मुझे
ऐ 'वली' अज़ बस कि उसकी याद में है महवे-दिल[7]
ग़ैर के ख़तरे सूँ निसदिन है फ़रामोशी मुझे

दिल जाम हक़ीकत सती जो मस्त हुआ
हर मस्त मजाज़ी सूँ ज़बरदस्त हुआ
ये बाग दिसा नज़र में तिनके सूँ कम
और अर्शे-अज़ीम पग-तले पस्त हुआ

---

१. सर्व सी ऊँची २. उपयुक्त कद वाला, प्रिय ३. पर्दा ४. बहिश्त की नदी ५. शराब पीना ६. गोद में लेना ७. मस्त दिल।

तिरे मुख के सफ़े पर ख़त लिखा कुदरत के क़ातिब ने
ताज्जुब में हैं सब ख़त्तात इस तहरीर[1] के देखे

कमर उस दिलरुबा की दिलरुबा है
निगह उस खुशअदा की खुशअदा है
सजन के हुस्न कूँ टुक फ़िक्र सूँ देख
कि ये आइन-ए-मअ़नी नुमा[2] है
ब-ख़त है जो हर आइन-ए-राज़
उसे मश्क़े-ख़तन[3] कहना बजा है
हुआ मालूम तुझ ज़ुल्फाँ सूँ ऐ शोख़
कि शाहे-हुस्न पर ज़ुल बहा[4] है
न होवे कोहकन[5] क्यों आहे-आशिक़
जो वो शीरीं अदा कल-गों-कबा है[6]
न पूछो आहो-ज़ारी की हक़ीक़त
अज़ीज़ाँ आशिक़ी का मुक्तज़ा[7] है
'वली' कूँ मत मलामत[8] कर ऐ वाइज़[9]
मलामत आशिक़ो पर कब रवा है

---

१. लेख २. प्रगट, समान ३. काला दाग़, तिल ४. छापा, नमूना ५. पहाड़ ६. पतली कमर वाला ग़ुलाम है ७. तकाज़ा ८. दोष देना ९. उपदेशक।

निगह की तेग़ ले वो ज़ालिमें-खूंख़ार आता है
जगत के खूबरुआँ[1] का सिपहसालार[2] आता है
हर इक दीदे कूँ हुक्मे-आरसी है उसके जल्वे सूँ
जदहाँ वो हैरतअफ़ज़ा[3] जानिबे-बाज़ार आता है
सुरज कूँ बूझता हूँ सुबह के ताराँ सूँ भी कमतर
नज़र में मेरी जब वो यार महे-रुख़सार[4] आता है
सनोबर के दिल ऊपर क्यूँ न हो क़ायम क़यामत तब
अदा सूँ जब चमन भीतर वो खुश रफ़्तार आता है
शाले-शमा[5] करता है सिने की अंजुमन रोशन
'वली' जिस शब कूँ मुझ दिल में ख़याले-यार आता है

बीमारी-ए-आ़शिक़ है तुझ अँखियाँ सती लेकिन
सदशुक्र कि तुझ लब मने हर दुख की दवा है
मुझ हाल पर ऐ बू-अली-ए-वक़्त नज़र कर
तुझ चश्म में बूझा हूँ कि क़ानूने-शफ़ा है

दमे-जाँबख़्श नौख़ताँ मुझकूँ
चश्म-ए-ख़िज्र है मसीहा है

१. सुन्दरों २. सेनापति ३. आश्चर्यप्रद ४. उजले गाल वाला
५. शमा के समान।

यक दीद[1] का वादा दिया तूं अपनी रज़ा[2] सूं
राज़ी हूँ मैं उस पर कि तिरी जिसमें रज़ा है

मग़ज़[3] उसका सुबास होता है
गुलबदन के जु पास होता है
आ शिताबी नहीं तो जाता हूँ
क्या करूँ जी उदास होता है
क्यों के कपड़े रंगूं मैं तुझ ग़म में
आशिक़ी में लिबास होता है
तुझ जुदाई में नहीं अकेला मैं
दर्दो-ग़म आस-पास होता है
ऐ 'वली' दिल दिया के मिलने कूँ
जी में मेरे हुलास होता है

मू-ब-मू[4] उसकूँ है परेशानी
ज़ुल्फ़े-मुश्कीं[5] का जिसकूँ सौदा है
ज्यूं 'वली' रात दिन है महवे-ख़याल
जिसकूँ तुझ वस्ल की तमन्ना है

१. नज़र २. खुशी ३. दिमाग़ ४. रोम-रोम ५. सुगन्धित केश।

न वो बाला[१] न वो बाली,[२] बला है
मलाए-आशिक़ाँ[३] नाज़ो-अदा है
तग़ाफ़ुल शोख़ का आशिक़ के हक़ में
सितम है, ज़ुल्म है, जोरो-जफ़ा है
कहा मिज़गाँ[४] ने उसकी सोज़ाँ सू
आशिक़ पर सितम करना रवा है
न जावे तुझ कूँ छोड़ ऐ गुलशने-नाज़
मिरा दिल बुलबुले-बाग़े-वफ़ा है
जहे दौलत कि दामे-साया-ए-यार[५]
हमारे सर पे ज्यूँ ज़ुले-हमा[६] है
मिरा दिल क्यों न जावे उस गली में
गली उस दिलरुबा की दिलकशाँ[७] है
हमेशा अन्दलीबे-आशिकी[८] कूँ
गुले-मक्सद[९] तेरा नक्शे-पा[१०] है
'वली' आते हैं राहे-इश्क़ में वो
कि जिनकूँ इस्तकामत[११] का असा[१२] है

हक से मग़रूर होके फिरता है
है 'वली' वाज़ क्या बिचारा है

---

१. ऊँचा २. पुराना ३. प्रगट, ज़ाहिर ४. पलकें ५. यार की छाया का फन्दा ६. पक्षी का साया ७. लुभावनी ८. इश्क़रूपी बुलबुल ९. फूलरूपी लक्ष्य १०. पैरों का निशान ११. सीधापन १२. लकड़ी का सहारा।

जूं शमा हुआ जो तुझ पे आशिक़
वो सर सूं क़दम तलक जला है

सनम मेरा सुखन सूं आशना है
मुझे फ़िकरे-सुख़न करना बजा है
चमन में वस्ल के हर जल्वे-यार
गुले-रंगीं बहारे-मुद्दआ है
न बख़्शे क्यूं तिरा ख़त ज़िदगानी
कि मौजे - चश्म-ए-आबे-बक़ा है
तग़ाफुल ने तिरे ज़ख़्मी किया मुझ
तिरी यह कमनिगाही नीमचा[1] है
नहीं वाँ आब-ग़ैराँ न आवे-खंजर
शहादतगाह-ए-आशिक़ कर्बला है
ग़नीमत बूझ मिलने कूं 'वली' के
निगाहे-पाकबाज़ाँ[2] कीमिया है

आज तुझ गम सूं है 'वली' गिरियाँ
देख जलपूर का तमाशा है

---

१. आधीचा २. पवित्रों की।

कमाँ अबरु पे जिव कुर्बां हुआ है
दिल उसके तीर का पैकाँ[1] हुआ है
भवाँ तेग़-ओ-पलक खंजर निगहे-तीर
यो किसके क़त्ल का सामाँ हुआ है
मिरा दिल मुझ सूँ कर-कर बेवफ़ाई
पसन्दे - ख़ातिरे - ख़ूबाँ[2] हुआ है
पिया है जाम दिल सूँ बादा-ए-ख़ूँ[3]
जो बज़्मे-इश्क़ में महमाँ हुआ है
अज़ीज़ाँ क्या है परवाने के दिल में
कि जी देना उसे आसाँ हुआ है
तावीबाँ[4] का नहीं मुहताज हर्गिज़
जिसे दर्दे-बुताँ[5] वरमाँ[6] हुआ है
बरंगे-गुल फ़िराके-गुल-रुख़ाँ में
गरेबाँ चाक ता-दामाँ हुआ है
सवादे-ख़त्ते-ख़ूबाँ दिलकशी में
बहारे-गुलशने-रीहाँ हुआ है
'वली' तस्वीर उसकी जिनने देखी
मशाले आरसी हैराँ हुआ है

१. निशाना २. सुन्दरों को पसन्द करने वाला ३. लाल शराब
४. चिकित्सक ५. बुतों का दर्द, मानवीय प्रेम ६. सूजन ।

इश्क़ नहीं ये हिजबर[1] आया है
दुशमने-होशो-सबर आया है
देख उसकी कलाहे बारानी[2]
चाँद पर आज अब्र[3] आया है
मुझ सूं वहशी हैं गुले-नयन गोया
फौजे-आहू[4] में बबर[5] आया है
या सनम का है गम जा-ए-बेदीं[6]
या विलायत सूं गबर[7] आया है
ऐ 'वली' क्या सबब कि आज सनम
बरसरे-जोरो-जबर आया है

जो खोल लट कूं चला लटक कर छमक-छमक कर जो मुख दिखाया
सो लट कूं देखे 'वली' लटक कर सजन नयन में अटक लिया है

ज़ाहिर हुआ है मुझ पे तिरे नाज़ सूं सनम
रंगीं बहारे-हुस्न बाहरे-अताब है
पोशीदा हाल इश्क़ रहे क्यों के ऐ 'वली'
ग़माज़े यादे-ज़ुल्फ़ो-ख़मो पेचो-ताब है

१. ज़ुल्म २. बरसात से बचाने वाली टोपी ३. बादल ४. हिरनों के झुण्ड में ५. शेर बब्बर ६. काफ़िर संकेत ७. अग्निपूजक।

इश्क़ में जिसकूँ महारत ख़ूब है
मशरबे-मजनूँ[1] तरफ़ मंसूब है
आशिक़े-बेताब[2] सूँ तर्ज़े-वफ़ा[3]
ज्यूँ अदा महबूब की महबूब[4] है
इश्क़ के मुफ़्ती[5] ने यों फ़तवा दिया
देखना ख़ूबाँ का दरसे-ख़ूब है
लख़्ते-दिल[6] पर ख़त लिखा हूँ यार को
दाग़े-दिल मुहरे-सरे-मक्तूब[7] है
ग़मज - ओ - नाज़ो-अदाए-नाज़नीं[8]
ज़ुल्म है, तूफ़ान है आशूब[9] है
लिख दिया यूसुफ़ ग़ुलामी ख़त तुझे
गर्चे नूरे-दीदा-ए- याक़ूब[10] है
हर घड़ी पढ़ता है इशआरे-[11] 'वली'
जिसकूँ हर्फ़े-आशिक़ी मरग़ूब[12] है

कुछ भला नहीं रक़ीब कूँ लगता
एक पा-पोश ख़ूब लगती है

---

१. मजनूँ जसा मिज़ाज २. व्याकुल प्रेमी ३. वफ़ा का ढंग ४. प्रिय ५. न्यायाधीश ६. दिल का टुकड़ा ७. लिखा पत्र ८. नाज़ुक हाव-भाव और इशारे ९. हलचल, घबराहट १०. आँख की याक़ूब-सी रोशनी ११. वली के शेर १२. पसन्द ।

जिसे अक़लीमे-तन्हाई[1] में अन्दाज़े-अक़ामत[2] है
जबीने-हाल[3] पर उसके सदा रंगे-सलामत है
गुज़र उस सर्व-क़ामत का हुआ है जबसूँ मस्जिद में
मुअज़्ज़न[4] की ज़बाँ ऊपर हमेश लफ्ज़े-क़ामत है
मुझे रोज़े-क़यामत का रहा नहीं खौफ़ ऐ वाइज़
ख़याले-क़ामते-रुअना[5] मिरे हक़ में क़यामत है
हुआ है सूरते-दीवार ज़ाहिद कंजे-ख़िलवत[6] में
यही उस हुस्न-हैरत बख़्श की ज़ाहिर करामत है
हुआ है जो जबीं-फरसा तिरी महराबे-अबरू में
सफ़े-उश्शाक़ में उसकूँ अमामत है अमामत[7] है
सिया-बख़्ती[8] हुई जग में नसीबे-आशिक़े-बेदिल
ये तुझ ज़ुल्फ़े-परेशाँ की परेशानी की शामत है
न हो नासह की सख़्ती सूँ मकदर ऐ दिले-शैदा[9]
सदा नक़्दे-मुहब्बत का महक संगे-मलामत है
शरफ़ जाती है तुझ कूँ ए गुले-गुलज़ार माशूक़ी
तजल्ली मुख ऊपर तेरे स्यादत[10] की अलामत है
'वली' जो इश्क़बाज़ी में हक़ीक़त सूँ नहीं वाक़िफ़
सुख़न उसका क़यामत में गुले-बाग़े मज़हमत है

---

१. अकेलापन रूपी कठोर भूमि २. ठहरना, क़याम करना ३. पेशानी पर ४. अज़ान देने वाला ५. प्रिय के कद का ख़याल ६. एकांत कोना ७. बादशाही ८. अंधेरा, अभाग्य ९. मस्त मन १०. बुज़ुर्गी।

सर्व मेरा मेहर सूँ आज़ाद है
शोख़ है, बेदर्द है, सय्याद है
हाथ सूँ उस ग़मज़हे-ख़ूँरेज़ के
दाद है, बेदाद है, फ़रियाद है
आब होवे क्योंकि दिल उस सर्व का
सख़्त है, बेरहम है, फ़ौलाद है
इश्क़ में शीरीं बचन के रात-दिन
आहे-दिल पर तेशा-ए-फरहाद है
ग़म नहीं मजनूँ कूँ हर्गिज़ ऐ 'वली'
ख़ाना-ए-ज़नज़ीर अगर आबाद है

आस्माँ ऊपर न बूझो चादरे-अब्रे-सफ़ेद[1]
जा नमाज़े-ज़ाहिदे-अज़लतनशीं[2] बरबाद है
सर्व की वारस्तगी[3] ऊपर नज़र कर ऐ 'वली'
बावजूदे-ख़ुदनुमाई[4] किस क़दर आज़ाद है

दीवाना किया है 'वली' कूँ सदा
तिरी ज़ुल्फ़ में क्या सजन छन्द है

...rary ... Pratap College
Srinagar

१. सफेद बादल रूपी चादर २. आरम्भ से पूर्व, अनादि ३. वास्ता ४. आत्म-अभिव्यक्ति।

क्यों न लेवें ज़ाहिदाँ[1] तुझ देख तर्जे बरहमन[2]
रिश्ता-ए-इख़लास तेरा रिश्ता-ए-ज़ुन्नार है
मत नसीहत कर 'वली' कूँ ऐ सुखन ना आशना
तर्क[3] करना इश्क़ का दुश्वार है, दुश्वार है

इश्क़ में सब्रो-रज़ा[4] दरकार है
फ़िक्र असबाबे-वफ़ा[5] दरकार है
चाक करने जामा-ए-सब्रो-क़रार
दिलबरे-रंगी-क़बा[6] दरकार है
हर सनम तस्ख़ीरे-दिल[7] क्यों कर सके
दिल रुबाई कूँ अदा दरकार है
ज़ुल्फ कूँ वा[8] कर कि शाहे-इश्क़ कूँ
साया-ए-बाले-हिमा[9] दरकार है
रख क़दम मुझ दीदा-ए-खूँबार पर
गर तुझे रंगे-हिना दरकार है
देख उसकी चश्मे-शहला[10] कूँ अगर
नर्गिसे-बागे-हया दरकार है
अज़्म[11] उसके वस्ल का है ऐ 'वली'
लेकिन इमदादे-खुदा दरकार है

---

१. धार्मिक २. ब्राह्मणों जैसा ढंग, आस्तिकता ३. छोड़न ४. सब्र और स्वीकृति ५. वफ़ादारी का ढंग ६. रंगीन लिबास प्रिय ७. दिल काबू करना ८. प्रकट ९. सुगंधित केशों की छाया १०. गहरी तीली आँखें ११. उद्देश्य।

जनूं के मुल्क के सुल्ताँ कूँ क्या हाजत है अफ़सर की
बगूला[1] सर उपर मजनूँ के सौ अफ़सर बराबर है
जु कुई हासिल किया है दौलते-आली कूँ सौज़श[2] की
फफोला उस दिले-दरिया भीतर गौहर बराबर है

न समझो-ख़ुद-बख़ुद दिल बेख़बर है
निगह में उस परी-रु की असर है
अझूँ लग मुख दिखाया नहिं अपस का
सजन मुझ हाल सूँ क्या बेख़बर है
मुहब्बत तर्क मत कर ऐ परी-रु
मुहब्बत में मुरव्वत मुहतबर है
तिरे क़द के तमाशे का हूँ तालिब
कि राहे-रास्तबाज़ी[3] बेख़तर है
तिरी तारीफ़ करते हैं मुलामिक[4]
सुना तेरी कहाँ हद्दे-बशर[5] है
बयाने अहले - मअनी[6] है पतूल[7]
अगर्जे हस्बे-ज़ाहिर-मुख़्तसर[8] है
'वली' मुझ रंग कूँ देखे नज़र भर
अगर वो दिलरुबा मुश्ताक़े-ज़र[9] है

१. बुलबुला २. दुःख-दर्द ३. इश्क़ की राह ४. औलिया, ज्ञानी ५. रहने का स्थान ६. सांसारिक अर्थ ७. मतलब ८. संक्षिप्त ९. इच्छा के अधीन ।

न जानूँ ख़त में तेरे क्या असर है
कि उस देखे सूँ दिल ज़ेरो-ज़बर[1] है
इसे बारीक-बीं[2] कहते हैं आशिक़
नज़र में जिसकी वो नाज़ुक कमर है
न होवे क्यूँ हजूमे रास्त - बाज़ाँ[3]
जहाँ उस सर्व-क़ामत का गुज़र है
हरिक सूँ आशनाँ होना हुनर नहीं
परी-रुख़सार[4] सूँ मिलना हुनर है
न पाऊँ तुझ सूँ गर सैवे-ज़नख़्दाँ[5]
निहाले - इश्क़बाज़ी बेसभर[6] है
रहेंगे ख़ाक हो तेरी गली में
वफ़ादारी हमारी इस क़दर है
'वली' मुझ दिल की आतिश पर नज़र कर
जहन्नुम की ज़वाँ पर अलहज़र[7] है

क्यों न होवे क़त्ल आशिक़ दम-बदम
शोख़ की बाँकी अदा शमशीर है

---

१. ऊपर-नीचे, धड़कना २. सूक्ष्मदर्शी ३. प्रेमियों की भीड़ ४. अप्सरा ५. तारीफ़ ६. बेकार ७. तौबा।

तिश्ना-ए-लब[१] कूँ तिश्नगी[२] मै की नहीं नासूर है
पनब-ए-मीना[३] उसे ज्यूँ मरहमे-काफ़ूर है
याद सूँ साक़ी के निसदिन हर पलक है शाखे-ताक[४]
अश्के-हसरत[५] उस उपर ज्यूँ खोशा-ए-अंगूर[६] है
उसका दिल हर्गिज़ न हो वीराँ अज़ल सूँ ता-अबद[७]
याद सूँ दिलदार की जिसका सीना महमूर[८] है
नफ़से-सरकश[९] पर जु कुई पाया है याँ फतह-ओज़फ़र[१०]
दारे-अक़िबा[११] मितर अल्हक़ वही मंसूर है
तुझ तजल्ली के सहोफ़े[१२] का सुरज है यक वरक़
अक्स तेरी ज़ुल्फ़ का जग में शबे-देजूर[१३] है
जो सिपाही होर सफ़ेदी सूँ हुआ है आशना
अहले-बीनश की नज़र में वो सदा मंज़ूर है
जल्द-रू हो इश्क़ की रह में कि ता पहुँचे नजीक
काहिली कूँ सट दे ऐ सालिक कि मंज़िल दूर है
खाकसारी जिसकूँ सुल्तानी है इस आलम मने
कासा-ए-ख़ाकी[१४] उसे ज्यूँ चीनी-ए-फ़ग़फूर[१५] है
यार के दीदार का तालिब है मूसा हरज़माँ
ऐ 'वली' दरबार उसका उसकूँ कोहे-तूर है

---

१. होंठों की प्यास २. प्यास ३. शराब की सुराही की सफ़ेद चमक ४. अंगूर की बेल ५. हसरतभरे आँसू ६. अंगूरों का गुच्छा ७. आदि से अन्त ८. भरपूर ९. सरकश की इच्छा १०. विजय ११. कठिन काम करने वालों की सभा, ज्ञानियों की सभा १२. प्याला १३. अंधेरी रात १४. मिट्टी का प्याला १५. चीनी की मिट्टी का प्याला ।

तुझ नयन के चमन मनें क्यों आ सकूँ कि याँ
खाराँ[1] के झाड़ो-झखड़े मिसगाँ[2] की बाड़ है

हुस्न का मसनद-नशीं वो दिलबरे-मुमताज़ है
दिलबराँ का हुस्न जिस मसनद का पा-अन्दाज़[3] है
ग़ैरे-हैरत है ख़बर उस आइना-ए-रू की किसे
राज़ के पर्दे में जिसकी ख़ामुशी आवाज़ है
उस नज़ाकत आफ़रीं पर नाज़ है क्या नाज़ का
सर सूँ ले ता-पग तलक सब नाज़ ही सब नाज़ है
दिल मनें आकर हुआ ख़िल्वतनशीं तेरा ख़याल
ग़म तिरा सीने में मेरे राज़ का हमराज़ है
वो अपस के वक़्त का मंसूर है आलम मनें
सिदक़ सूँ तुझ बाट में जो आशिक़े-सरबाज़[4] है
सूख कर तुझ ग़म मनें यह तन हुआ है ज्यूँ रबाब[5]
दम मिरा सीने में मेरे ज्यूँ कि तारे-साज़ है
याद सूँ उस रश्के-गुलज़ारे-अरम की ऐ 'वली'
रंग कूँ मेरे सदा ज्यूँ बूए-गुल-परवाज़[6] है

---

१. खारे आँसू २. पलक ३. पाँओ सुशोभित ४. सिर-धड़ की बाज़ी लगाने वाला ५. ताँत ६. उड़ने वाली फूलों की खुशबू।

तेरे ख़याल में जु हुआ ख़ुश्क ज्यूँ रबाव[1]
मिज़राबे-ग़म[2] का हाथ उस ऊपर दराज़ है
बाँगे-बुलन्द[3] बात यह कहता हूँ ऐ 'वली'
इस शेर पर बजा है अगर मुझ कूँ नाज़ है

मौसमे-ख़त में न कर फ़िक्र ऐ गुले-रंगीं-अदा
सबज़-ए-गुलज़ारे-ख़ूबी का अभी आग़ाज़[4] है

ज़िन्दा करना अस्तख्वाँ[5] कूँ गर्चे था कारे-सेज़
ज़िन्दा करना शौक़ कूँ तुझ नाज़ का ऐजाज़[6] है

शौक़ के मरकब[7] कूँ राहे-इश्क़ में
ऐ सजन तेरी निगाह महमेज़[8] है

दिल मिरा ऐ दिलबरे-शीरीं-बचन
तुझ लबाँ के शौक़ सूँ लबरेज़ है
चाहता हूँ दिल सती ऐ नाज़नीं
जंग तेरी वो कि सुलह-आमेज़[9] है

---

१. ताँत, तार २. ग़मी की मिज़राब ३. ऊँची आवज़ में, अज़ान देने वाले के समान ४. आरम्भ ५. हड्डी ६. अधिक आजज़ी, लाचारी ७. तरकीब छिपा हुआ, केन्द्र-बिन्दु ८. जूते या पाँव का निशान, पथ-प्रदर्शक ९. सुलहपूर्ण।

तहसीले-दिल के होने ये मुख किताब बस है
दाताए-मुन्तख़ब[1] कूँ ये इन्तख़ाब[2] बस है

मुझ हाल का करे गर आकर सवाल दिलबर
तो लाजवाब होना मुझ कूँ जवाब बस है

ताबे-कमर सूँ तेरी बेताब बस कि हूँ मैं
मानिन्द ज़ुल्फ़े-ख़ूबाँ[3] मुझ पेचो-ताब बस है

जो इश्क़ के नगर का है सूबेदार जग में
मजनूने-लैला-ए हुस्न उसका ख़िताब बस है

जु कुई 'वली' की मानिन्द पीता है इश्क़ की मै
उस बिरह के जले कूँ दिल का कबाब बस है

असबाबे-जंग रखना दरकार नहीं हमन कूँ
दुशमन के मारने कूँ इक तीरे-आह बस है

दिल ले गया हमारा जादू सूँ वो परी-रू
दीवानगी हमारी उस पर गवाह बस है

ग़म नहीं अगर रक़ीबाँ आए हैं चढ़ 'वली' पर
ऐ दोस्त, तुझ करम की मुझ कूँ पनाह बस है

---

१. छाँटने वाला २. चुनाव, छाँटा हुआ ३. सुन्दर प्रिय की अलकें।

गर तमन्ना है कि हो रोशन दिलाँ में सर बुलन्द
मुझ सूँ परवाने ऊपर हो मोम दिल ऐ शमारु

आशिक़ कूँ तुझ दरस का दायम ख़याल बस है
ख़ामोश होके रहना ऐ शाहे-क़ाल[1] बस है
गर ख़ल्क़ ईद ख़ातिर मंगती है माहे-नौ[2] कूँ
मुझ दिल की ईद होने अबरु-हिलाल बस है
गर कामरू[3] में लोगाँ आलम कू मोहते हैं
हर दिलरुबा कूं हर्गिज़ देता नहीं हूँ दिल मैं
दिल बस्तगी कूँ मेरी वो बेमशाल बस है
हरचन्द ऐ 'वली' हूँ ग़र्के-बहरे-असियाँ[4]
मुझ कूँ शफ़ी-मुहशर[5]-हज़रत की आल[6] बस है

देख कर उसकी अदा-ओ-नाज़ कूँ
हर परी कूँ ख़्वाहिशे पा-बोस[7] है

१. शाही गुफ़्तगू २. नया चाँद, दूज का या ईद का चाँद ३. कामरूप, असम प्रदेश का एक भाग, जहाँ का जादू प्रसिद्ध है ४. पापसागर ५. परिणाम का सहारा ६. नज़दीकी कुनबा ७. पौत्र का चुम्बन।

गर्मी सूँ तिरी तबीह[1] की डरते हैं सियाबख़्त
गुस्से सूँ कड़कना तिरा बिजली की कड़क है
करने कूँ 'वली' आशिक़े-बेताब कूँ ज़ख्मी
वो ज़ालिम, बेरहम निपट है निधड़क है

सर्व मेरा जब सती गुलपोश[2] है
हर तरफ़ सूँ बुलबुलाँ का जोश है
ऐ सजन यक बात है, लेकिन इसे
बूझता है वो कि जिस कूँ होश है
गोल पगड़ी के न फिर हर्गिज़ तू गिर्द
गोल पगड़ी हुस्न का सरपोश है
देखना तुझ क़द का ऐ नाज़ुक बदन
बायसे-ख़मियाज़ा-ए-आग़ोश[3] है
अब ख़लासी इश्क सूँ मुमकिन नहीं
दामे-दिल ज़ुल्फ़ो-दुवामी पोश[4] है
क्यों न हो उम्मीद का रोशन चिराग़
शमा-ए-मजलिस साक़िए-मै-नोश[5] है
हर सुख़न तेरा लताफ़त सूँ 'वली'
मशले-गौहर ज़ीनते-हर गौश[6] है

---

१. अंजाम २. फूलों से पूर्ण, सजा हुआ ३. अपनी कमी प्रगट करने वाला ४. दिल ज़ुल्फों के फन्दे में है ५. शराबी ६. मोती-सी चमक चारों ओर फैली है।

दिल तलबगारे[1] - नाज़ महवश[2] है
लुत्फ़ उसका अगर्चे दिलकश है
मुझ सूँ क्योंकर मिलेगा हैराँ हूँ
शोख़ है, बेवफ़ा है, सरकश है
क्या तिरी ज़ुल्फ़, क्या तिरे अबरू
हर तरफ सूँ मुझे कशाकश है
तुम बिन ऐ दाग़ बख़्श सीना-ओ-दिल
चमने-लाला दश्ते - आतिश[3] है
ऐ 'वली' तजुर्बे सूँ पाया हूँ
शोला-ए-आह शौक़े - बेग़श है

आ ऐ माहे-दोहफ़्ता मिरे पास एक रोज़
हर आन तुझ फ़िराक़ की सीना पे साल है

मस्त जामे-इश्क़ कूँ कुछ ग़म नहीं
ख़ातिरे-नासह अगर नासाफ़ है

१. इच्छुक २. चाँद-सा ३. जंगल की आग।

हुस्न तेरा सूरज पे फ़ाज़िल[1] है
मुख तिरा रश्के-माह-एकामिल[2] है
हुस्न के दरस में लिया जो सबक़
मुझ नज़क फ़ाज़िलो - मुकम्मल[3] है
रात-दिन तुझ जमाले-रोशन[4] सूँ
फज़्ले-परवरदिगार[5] शामिल है
जिसकूँ तुझ हुस्न की नहीं है ख़बर
बे-गुमाँ दो जहाँ में ग़ाफ़िल है
ज़ाद[6] राहे-दिल सूँ जो बग़ल में लिया
इश्क़ के पन्थ में वो आक़िल[7] है
इश्क़ की राह के मुसाफिर कूँ
हर क़दम तुझ गली में मंज़िल है
ऐ 'वली' तर्ज़े-इश्क़[8] आसाँ नहीं
आज़माया हूँ मैं कि मुश्किल है

तुझ फैज़ सूँ अँखियाँ कूँ मेरी नित है तरी
तुझ याद सूँ हर अश्क मिरा रश्के-परी
अज़बस कि तेरा जमाल सीने में रखा
पाया है मेरे ख़याल ने दीया - वरी

१. अधिक, हावा २. चाँद की ईर्षा योग्य ३. उच्चतापूर्ण ४. प्रगट प्रकाश ५. ईश्वरीय कृपा, प्रकाश ६. सामान, खाना, तोशा ७. अक्लमन्द है ८. इश्क का पन्थ।

नश्शा बख़्श आशिक़ाँ वो साक़ि-ए-गुलफ़ाम[१] है
जिसकी अँखियाँ का तसव्वुर[२] बेखुदी का जाम है
खोलना जुल्फ़ाँ का कुछ दरकार नहीं ऐ खुश नयन
यक निगाहे-नाज़ तेरी दो जहाँ का दाम है
आफ़ताब आता है महरूम होके तुझ कूचे तरफ
सुबह सादक उसके बर में जामा-ए-अहराम[३] है
दिल कूँ जमीयत[४] है जब जाता हूँ दम्बाले-सनम[५]
आरसी के साथ में सीमाब कूँ आराम है
मत कदम रख उस तरफ़ ऐ जाहिदे-खिलवत नशीं[६]
ग़मज़हे-खूँख़ार[७] ज़ालिम दुश्मने इस्लाम है
जिस सनम की सरकशी का जग में है सेयत[८] बुलन्द
शुक्रे-हक़ वो काफ़िरे-बदकैश मेरा राम है
ऐ 'वली' क्यों खुश्क-मग़ज़ी का नहीं करता इलाज
याद उन अँखियाँ की तुझ कूँ रोग़ने-बादाम है

तुझ गाल पर नह का निशान दिस्ता मुझे उस घात का
रोशन शफ़क़[९] पर जगमगे ज्यों चाँद पिछली रात का

---

१. फूल जैसे रंग वाला २. ध्यान ३. हज का लिबास ४. जमात
५. साजन के पीछे ६. एकान्तप्रिय धार्मिक ७. खूँखार संकेत ८. प्रसिद्धि, ऊँचाई ९. आकाश।

उस सनम ने जब निकाला मुख सती अपना नक़ाब
सुबह-सादक़ का गेरबाँ फाड़ ज्यों सूरज दिसा

उस सर्वे-खुशअदा कूँ हमारा सलाम है
उस यार बेवफ़ा कूँ हमारा सलाम है
लेता नहीं सलाम हमारा हिजाब सूँ
उस साहबे-हया कूँ हमारा सलाम है
उस बाज दिल में मेरे दूजा नहीं है मुद्दा
उस दिल के मुद्दआ कूँ हमारा सलाम है
नाज़ो-अदा सूँ दिल कूँ मेरे मुब्तला किया
उस नाज़नीं पिया कूँ हमारा सलाम है
आरामे-जानो-दिल है 'वली' जिसका देखना
उस जाने-दिलरुबा कूँ हमारा सलाम है

आरफ़ाँ[1] पर हमेशा रोशन है
कि फ़ने-आशिकी[2] अजब फ़न है
दुश्मन दीं[3] का दीने-दुश्मन है
राहज़न[4] का चिराग़ रोशन है

१. फनकार, कलाकार २. आशिकी की कला ३. धर्म का शत्रु ४. बटमार।

निगू कर आशनाई ग़ैर सूँ ऐ सीमतन[1] हर्गिज़
न हो ऐ शमारू हर अंजुमन[2] में शोलाज़न[3] हर्गिज़

उस शाहे-नौख़ताँ[4] कूँ हमारा सलाम है
जिसके नगीने-लब[5] का दो आलम में नाम है
सरशारे-अनबिसात[6] है उस अंजुमन मने
जिस कूँ ख़याल तेरी अँखाँ का मदाम है
जिस सरज़मीं में तेरी भँवाँ का बया करूँ
ख़ूबी हलाले-चर्ख़[7] की वहाँ नातमाम है
जब लग है तुझ गली में रक़ीबे सियाह-रू[8]
तब लग हमारे हक़ में हरेक सुबह-शाम है
तन्हा न बन्द इश्क़ में तेरी हुआ 'वली'
ये ज़ुल्फ़ हल्क़ादार दो आलम का दाम[9] है

करेगी संगदिल के दिल में जा नक़्श[10]
सदाए - बेदिलाँ फरहादे - फ़न है
बजा है उस कूँ कहना ख़ुसरुए-वक़्त[11]
नज़र में जिसकी वो शीरीं - बचन है

---

१. चांदी से चमकते २. सभा, दुनिया ३. प्रकाश करने वाले ४. नौजवानों के शाह ५. ओंठ के नगीने ६. शक्ति से बाहिर ७. आकाश पर चमकते दूज के चाँद ८. काले मन वाला रक़ीब ९. फन्दा १०. चित्र ११. समय का खुसरो, शाह, मालिक ।

तिरा मजनूं हूँ सहरा[१] की क़सम है
तलब में हूँ तमन्ना की क़सम है
सरापा[२] नाज़ है तू ऐ परी-रू
मुझे तेरे पराया की क़सम है
दिया हक़ हुस्ने-बालादस्त[३] तुझ कूँ
मुझे तुझ सर्वे-बाला[४] की क़सम है
किया मुझ जुल्फ़ ने जग कूँ दिवाना
तिरी जुल्फ़ाँ के सौदा[५] की क़सम है
दुरंगी तर्क कर हर इक से मत मिल
तुझे तुझ क़दे-रुअना की क़सम है
किया तुझ इश्क़ ने आलक कूँ मजनूँ
मुझे तुझ रश्क़े-लैला की क़सम है
'वली' मुश्ताक है तेरी निगह का
मुझे तुझ चश्मे-शैहला[६] की क़सम है

कूंचा-ए-यार ऐन कासी है
जोगिए-दिल वहाँ का बासी है
पी के बैराग की उदासी सूँ
दिल पे मेरे सदा उदासी है

---

१. रेगिस्तान २. सिर से पाँव तक ३. ऊँचा हुस्न, अत्यधिक सौन्दर्य
४. ऊँचे सर्व के पेड़ ५. दीवाना ६. चमकती नीली आँख।

सनम मेरा निपट रोशन बयाँ है
बरंगे-शोला-ए सर ता-पा-ज़वाँ[1] है
नज़र करने में दिल उसका लिया हूँ
कमन्दे-गुल[2] निगाहे-बुलबुला है
बजा है गर वो सर्वे-गुलशने-ता
हमारी रास्ती[3] पर मेहरबाँ है
वफ़ा कर हुस्न पर मग़रूर मत हो
वफ़ादारी बहारे-बेखिज़ाँ[4] है
सनम मुझ दीदा-ओ-दिल[5] में गुज़र कर
हवा है, बाग़ है, आबे-रवाँ[6] है
हुआ तीरे मुलामत का निशाना
नज़र में जिसकी वो अबरू-कमाँ है
'वली' उसकी जफ़ा[7] सूँ ख़ौफ मत कर
जफ़ा करना वफ़ा का इम्तहाँ है

तिरी ये ज़ुल्फ़ है शामे-गरेबाँ[8]
जबीं[9] तेरी मुझे सुबहो-वतन है
'वली' ईराँ ओ तूराँ में है मशहूर
अगर्चे शायरे-मुल्के-दकन है

१. सम्पूर्ण शरीर २. टेढ़ी फूल-सी भँवें ३. प्रेम ४. पतझड़रहित वसन्त, सदा बहार ५. आँख और मन में ६. बहता पानी, आँसू ७. बेवफ़ाई, अत्याचार ८. शाम का आँचल ९. पेशानी, मस्तक।

तिरे लब पर जू नत्ते-अम्बरीं[1] है
ख़ते-याक़ूत सूँ[2] नक़्शे-नगीं[3] है
चमन-आराए-बाग़े-ख़ुश-अदाई
निहाले-क़द सर्वे-गुल जबीं है
कहो ज़ाहिद कूँ जावे उस गली में
अगर मुश्ताक़ फिरदौसे-बरीं[4] है
न आवेगी कधी लिखने में हर्गिज़
मुसव्वर यो अदाए-नाज़नीं है
हमेशा देखती है तुझ कमर कूँ
निगह मेरी सदा बारीक-बीं[5] है
मिरे हक़ में अ़नायत नामा-ए-यार[6]
मशाले-शह पर-रुह-अल-अमीं[7] है
करे इक आन में जग कूँ दीवाना
निगह तेरी कि जादू आफ़रीं है
नहीं गुलबर्ग़ गुलशन में ऐ लालन
तिरे गुलगूँ का यो दामाने-ज़ीं[8] है
सवेदा[9] की नमत जावे न हर्गिज़
ख़याल उस ख़ाल का जो दिलनशीं है
'वली' जिन ने सुना मेरे सुख़न कूँ
ज़बाँ पर उसकी ज़िकरे-आफ़रीं है

---

१. लाल बिछौना २. लाल नक़्श ३. नगीने जैसा लाल ४. स्वर्ग की सुन्दरता ५. सूक्ष्मदर्शी ६. यार का पत्र ७. मज़बूत परों के समान पनाह देने वाले ८. दामन की शोभा ९. दिल के काले निशान-सा।

निकल ऐ दिलरुबा घर सूँ कि वक़्ते-बेहिजाबी[१] है
चमन में चल बहारे-निस्तरन है माहेताबी[२] है
किसी की बात सुनता नहिं किसी पर रहम करता नहिं
हटीला है, सितमगर है, जफ़ाजू है, शराबी है
गया है जब सूँ वो गुलरू चमन में मैकशी करने[३]
हर इक गुल सूरते-साग़र हर इक गुँचा गुलाबी है
गली में उस सितमगर न जा ऐ दिल, न जा ऐ दिल
कि जाँबाज़ी में आफ़त है, क़यामत है, ख़राबी है
किसे ताक़त है अँखियाँ खोलकर देखे तिरी जानिब
झलक तुझ हुस्ने-रोशन की शुआए-आफ़ताबी[४] है
वफ़ादारी बहारे-गुलशने-ख़ूबी है ऐ गुलरू
न बूझो सरसरी हर्गिज़ सुख़न मेरा किताबी है
बहारे आशिकी कूँ ताज़ा करना ऐ गुले-रुअना
तिलत्तफ़[५] है मदारा[६] है, करम है, बेअताबी[७] है
'वली' पाया रुबाई चार अबरु के तसव्वर में
तख़ल्लुस चश्मे-गिरियाँ[८] का बजा है गर सुहाबी[९] है

क़सम तेरे तग़ाफ़ुल की कि नर्गिस की क़लम लेकर
तिरी अँखियों की आहू कूँ लिया हूँ खूने-जादू सूँ

---

१. बेपर्दगी का समय २. चाँदनी ३. शराब पीने ४. सूर्य की किरणें ५. मेहरबानी, लुत्फ़ ६. ख़ातिर ७. मेहरबानी ८. रोती आँख ९. बरसने वाला बादल।

इश्क़ बेताब जाँ गुदाज़ी[1] है
हुस्ने-मुश्ताक़ दिलनवाज़ी है
अश्के-खूनीं सूँ जू किया है वज़ू[2]
मज़हबे-इश्क़ में नमाज़ी है
जो हुआ राज़े-इश्क़ सूँ आगाह
वो ज़माने का फ़ख्रे-राज़ी है
पाक बाज़ाँ सूँ यूँ हुआ मफ़हुम[3]
इश्क़ मज़मूने-पाकबाज़ी[4] है
जा के पहुँची है हद ज़ुल्मत कूँ
बस कि तुझ ज़ुल्फ में दराज़ी है
तजुर्बे सूँ हुआ मुझे ज़ाहिर
नाज़े-मफ़हूम[5] बेनियाज़ी[6] है
ऐ 'वली' ऐशे-ज़ाहरी का सबब
जल्वा-ए-शाहदे-मजाज़ी है

और मुझ पास क्या है देने कूँ
देखकर तुझको रोए देता हूँ

उसके नहाने की सुख ख़बर आया
चश्मा-ए-आफ़ताब गर्म निकल

१. जानलेवा २. नमाज़ पढ़ने से पहले हाथ मुँह-धोना ३. समझा हुआ, मालूम हुआ ४. पवित्रता का विषय ५. नाज़ की मालूमियत ६. बेरुखी।

अगर्चे तन्नाज़[1] यार जानी है
माहे-ऐश[2] जादुआनी है
याद करती है ख़त कूँ ज़ुल्फे-सनम
काम हिन्दु का बेदख़्वानी[3] है
तुझ सूँ हर्गिज़ जुदा नहीं ऐ जाँ
जब तलक मुझ में ज़िन्दगानी है
आशना नौनिहाल सूँ होना
समर-ए-गुलशने-जवानी है
दिल में आया है जब सूँ सर्वे-रवाँ
तब सूँ मुझ शेर में रवानी है
ऐ सिकन्दर, न ढूँढ आबे-हयात
चश्म-ए-ख़िज्र खुशपयानी है
वक़्त मरने के बोलता है पतङ्ग
कि मुहब्बत रफ़ीक़े-जानी[4] है
गर्चे पाबन्दे-लफ़्ज़ हूँ, लेकिन
दिल मिरा आशिक़े-मुहानी है
ऐ 'वली' फ़िक्रे-साफ़ साहिबे-दिल
गौहरे-बहर नुक़्तादानी है

---

१. तना हुआ, अकड़ में २. चाँदनी रात का आनन्द ३. वेदों का अध्ययन ४. जीवन के साथ, जीवनसाथी।

सदा हम कूँ ख़याले रंगे-रूए-यारजानी[1] है
हमारे शीशा-ए-दिल में शराबे-अरग़वानी[2] है
ज़बाने-हाल सूँ कहता है खुसरे-सब्जा-ए-नौख़त
बयाँ करना सनम के लब का आबे-ज़िन्दगानी[3] है
गया है हुस्न की शादी में अज़बस बेतकल्लुफ़ हो
सरापा इश्क़ के बर में लिबासे-ज़ाफ़रानी[4] है
तवाज़ा[5] की तवक्क़ो नौनिहालाँ सूँ न रख ऐ दिल
कि बेबाकी ओ शोख़ी लाज़िमे-वक़्ते-जवानी है
हुआ है शौक़ ज़ुल्फ़े भू-कमर सूँ खुश सुख़न मेरा
'वली' वो शेर नाज़ुक मौज दरिया-ए-मुहानी है

जिन ने तेरे हुस्न के दरिया कूँ देखा आँख भर
वो हुआ खाली अपस सूँ जग में मानिन्दे-हुबाब[6]

यक सुखन तेरे लब सूँ ऐ मसीह-रूहे-अफ़ज़ा[7]
हक़ में जाँनिसारों के आबे-ज़िन्दगानी है
सादारूह जहाँ के सब गोश रख के सुनते हैं
ऐ 'वली' सुख़न तेरा गौहरे-मुहानी है

---

१. जान से प्यारा २. शराब की लाली ३. जीवन-अमृत ४. सिन्दूर पोशाक ५. आजज़ी ६. बुलबुला ७. दिल बढ़ाने वाला।

तुझ कूँ ख़ूबाँ में बादशाही है
सर ऊपर साया-ए-इलाही है
बायसे दिलरुबाई-ए-आशिक़[1]
खुश निगाहों में खुश-निगाही है
कम निकलने में उस परी-रू[2] के
इश्कबाज़ाँ की ख़ैरख्वाही[3] है
जग में तेरी भवाँ की शोहरत सूँ
कश्ति-ए-अश्क़ाँ तबाही है
क़त्ले-उश्शाक़ पर बन्ध्या है कमर
ग़मज़हे - तेग़ज़न सिपाही[4] है
शाहे-ख़ूबाँ के रुख पे सब्जा-ए-ख़त
हुस्न की फ़ौज की सिपाही है
क्यों न हों इश्क़बाज़ खुसरु-ए-वक़्त
इश्क़ का दाग़ चित्रशाही है
नौख़ताँ की तरफ न जा ज़ाहिद
ज़ेहदो-तक्वा[5] की वहाँ मनाही है
इश्क़बाज़ाँ में है 'वली' साबित
तालिबे-गुलरुखाँ कमाही है

---

१. प्रेम की दिलजोई का कारण २. सुन्दरी ३. भला चाहना ४. तेग़धारी सिपाही ५. धार्मिक विचार वाले।

मैं न जाना था कि तू नादान है
दिल दिया था तुझकूँ दाना बूझ कर

शुक्र वो जान गई, फिर आई
ऐश की आन गई, फिर आई
तेरे आने सती ऐ राहते-जाँ[1]
शहर की जान गई फिर आई
फिर के आना तिरा है बायसे-शौक़[2]
जिस तरह तान गई, फिर आई
तिरे आने सती ऐ माहे-हुस्न[3]
इश्क़ की शान गई फिर आई
ऐ 'वली' क़न्द-मकार है यह बात
शुक्र वो जान गई फिर आई

निरा मुख है चिराग़े-दिलरुबाई
अयाँ है उसमें नूरे-आशनाई
लिखा है तुझ क़द उपर क़ातिबे-सनह
सरापा मअनी-ए-नाज़ुक अदाई
तु है सर-पाओं लग अज़बस कि नाज़ुक
निगाह करती है तुझ पग कूँ हिनाई[4]

१. जान को चैन देने वाले २. शौक़ का कारण ३. सुन्दर चांद ४. मेहन्दी के रंग की।

सजन में है शुआरे - आशनाई[1]
न हो क्यों दिल शिकारे - आशनाई
सनम तेरी मुरव्वत[2] पर नज़र कर
हुआ हूँ बेकरारे - आशनाई[3]
निपट दुश्वार था मुझ दिल में ऐ जाँ
ज़माने - इन्तज़ारे - आशनाई
हुआ मालूम तुझ मिलने सूँ लालन
कि रंगीं है बहारे आशनाई
हया के आब सूँ बाग़े - वफ़ा में
रवाँ है जो बहारे - आशनाई
वफ़ा दुशमन न हो ऐ आशना रु
वफ़ा पर है मदारे - आशनाई[4]
मुरव्वत के हमेशा हाथ में है
अनाने - अख़्तयारे - आशनाई[5]
मदारा तर्क मत कर ऐ हया - दोस्त
मदारा है हिसारे - आशनाई
'वली' इस वास्ते गिरयाँ[6] हूँ हर आन
कि तर हो सब्ज़ा - ज़ारे - आशनाई

---

१. प्रेम का शहूर, ढंग २. झिझक ३. प्रेम की बेचैनी ४. प्रेम का दारोमदार ५. प्रेम की आन, वश ६. रोता।

तुझ मुख का रंग देख कँवल जल में, जल गये
तेरी निगाह काम सूँ गुलो-गुल पिघल गये
हर इक कूँ काँ[१] है ताब जु देखे तिरी तरफ
शेराँ तिरी निगाह की वहशत[२] सूँ टल गये
साफ़ी[३] तिरे जमाल[४] की काँ लग बयाँ करूँ
जिस पर क़दम निगाह के अक्सर फ़िसल गये
मरने से पहले जु कि मरे इस जगत मनें
तस्वीर की नमत वो खुदी सूँ निकल गये
पाएँ जु कुई लज्जाते-दीं[५] जग में 'वली'
दुनियाँ में हाय अपने वो हसरत सूँ मल गये

अन्दवहो-ग़म[६] की बात तिरे बाज बन गई
आवाज़ मेरी आह की फिर ता-गगन गई
ता-हश्र[७] उसका होश में आना मुहाल है
जिसकी तरफ सनम की निगाहे-नयन गई
सुरमें का मुँह सियाह किया[८] उनने जग मनें
जिस की नयन में पीव की ख़ाके-चरन गई
तन्हा सवाए-हिन्द[९] में शोहरत नहीं सनम
तुझ ज़ुल्फ मुश्कबू[१०] की ख़बर ता-ख़तन[११] गई
अब लग 'वली' पिया ने दिखाया नहीं दरस
ज्यूँ शमा इन्तज़ार में सारी रयन[१२] गई

---

१. कहाँ २. भयानकता ३. सफ़ाई ४. प्रकाश, सौन्दर्य ५. धर्म का आनन्द ६. ग़म के रंज ७. ता-क़यामत ८. काला किया, मात देना ९. भारतीय वायु-मण्डल १०. सुगन्धित केश ११. ख़तन तक १२. रात।

